

तकबुर का रस सीखना इम है.



(इतावा २-अविद्या, जि. 23, स. 624, मुलपुसल)

TAKABBUR (GUJARATI)

तकबुर

तकबुर किसे कहते हैं ?

तकबुर के 6 तुकसानात

तकबुर की 19 अलामात

अनोभी छीक

तकबुर के मुफ्तलिफ अन्दाज

तकबुर के 8 अरबाज और उन का का बलाष

पुह को हकीर समजने का तरीका

बुगुगाने दीन की आबिगी की हस हिकायात

सात मुझीह अपराह

مكتبة الرينة
(دعوت اسلامی)

SC 1286

मह-त-मतुल मदीना
(दा'वत मुसलमी)

अल
मदी-मतुल
छम्बिया

(दा'वत इस्लामी)



(दा'वत इस्लामी)

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

કિતાબ પઢને કી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નાત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી,
હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર
કાદિરી રઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

દીની કિતાબ યા ઇસ્લામી સબક પઢને સે પહલે ઝૈલ મેં દી
હુઇ દુઆ પઢ લીજિયે اِنَّ نَعَاءَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ જો કુછ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ
હે :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તર્જમા : ઐ અલ્લાહ! હમ પર ઇલ્મો હિકમત કે દરવાઝે ખોલ
દે ઐર હમ પર અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઐર
બુરુર્ગા વાલે !
(المُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠٤ دارالمعصر بيروت)

નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દૂરુદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના



વ બકીઅ

વ મગ્ફિરત

13 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 1428

તકબ્બુર કી તબાહ કારિયોં, અલામાત ઓર ઈલાજ કા બયાન

તકબ્બુર

પેશકશ

મજલિસે અલ મદી-નતુલ ઈલ્મિયા (શો'બએ ઈસ્લાહી કુતુબ)

નાશિર

મક-ત-બતુલ મદીના અહમદ આબાદ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

नाम किताब : तक़्क़ूर

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल ईल्मिय्या (शो'बअे ईस्लाही कुतुब)

सिने तबाअत : रबीउल गौस 1431 हि. अ मुताबिक 11 मई 2010

नाशिर : मक-अ-तुल मदीना अउमदआबाद

तस्दीक नामा

तारीख :

हवाला:

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى اله وأصحابه اجمعين

तस्दीक की जाती है के किताब “तक़्क़ूर”

(मत्बूआ मक-त-अतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाईल की जानिअ से नज़रे सानी की कोशिश की गई है. मजलिस ने ईसे अकाईद, कुफ़िय्या ईबारात, अफ्लाकिय्यात, फ़िक़ही मसाईल और अरबी ईबारात वगैरा के हवाले से मक़दूर अर मुला-हज़ा कर लिया है, अलअत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग-लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं.

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाईल

(दा'वते ईस्लामी)

26-11-2009



E-mail : ilmiya26@dawateislami.net

maktabahind@gmail.com

www.dawateislami.net

म-दनी इल्लिजा: किसी और को यह किताब छापने की इजाज़त नहीं

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَّا بَعْدُ فَأَعِذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

“आजिजी की ब-र-कतें” के 13 छुड़ई की निस्बत से
 इस किताब को पढने की “13 निय्यतें”

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : 05هـ : نَبِيُّهُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ
 निय्यत उस के अमल से बेहतर है.

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: 0942، ج 1، ص 185)

दो म-दनी कूल : (1) बगैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ-मले पैर
 का सवाब नहीं मिलता.

(2) जितनी अच्छी निय्यतें जियादा, उतना सवाब भी जियादा.

(1) हर बार उम्ह व (2) सलात और (3) तअव्वुज व

(4) तस्मिथ्या से आगाज कइंगा. (ईसी सफ़हा पर उपर दी छुई

दो अ-रबी ईबारात पढ लेने से यारों निय्यतों पर अमल हो जायेगा).

(5) रिजाअे ईलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अक्वल ता आभिर

मुतालआ कइंगा. (6) उत्तल वस्अ इस का भा वुजू मुता-लआ

कइंगा. (7) कुरआनी आयात और (8) अहादीसे मुबारका की

जियारत कइंगा. (9) जहां जहां “अल्लाह” का नामे पाक आयेगा

वहां عَزَّوَجَلَّ और (10) जहां जहां “सरकार” का ईस्मे मुबारक आयेगा

वहां صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पढूंगा. (11) शर-ई मसाईल

सिभुंगा. (12) अगर कोई बात समज में न आई तो उ-लमा से

पूछ लुंगा. (13) किताबत वगैरा में शर-ई ग-लती मिली तो

नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ कइंगा. (मुसन्निफ़ या नाशिरीन

वगैरा को किताबों की अगलात सिई ज़बानी बताना भास मुईद नहीं होता.)

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल मदी-नतुल इल्मिया

अज : शैभे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, भानिये दा'वते इस्लामी
 हजरते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार
 कादिरि रजवी जियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ الْعَالِيَة

الحمد لله على إحسانه وبقضله رسوله صلى الله تعالى عليه وسلم

तब्दीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी
 तहरीक, “दा'वते इस्लामी” नेकी की दा'वत, अहल्याअे सुन्नत और
 इशाअते इल्मे शरीअत को दुन्या त्तर में आम करने का अज्मे
 मुसम्मम रभती है, इन तमाम उमूर को ज हुस्नो खूबी सर अन्जाम
 देने के लिये मुतअदद मजलिस का कियाम अमल में लाया गया है
 जिन में से अेक मजलिस “अल मदी-नतुल इल्मिया” भी है जे
 दा'वते इस्लामी के उ-लमा व मुफ्तियाने किराम كَرَّمَهُمُ اللهُ تَعَالَى पर
 मुशतमिल है, जिस ने जालिस इल्मी, तहकीकी और इशाअती काम
 का बीडा उढाया है. इस के मुन्दरि-जअे जैल छे शो'बे हें :

- (1) शो'बअे कुतुबे आ'ला हजरत
- (2) शो'बअे दसी कुतुब
- (3) शो'बअे इस्लाडी कुतुब
- (4) शो'बअे तराजिमे कुतुब
- (5) शो'बअे तइतीशे कुतुब
- (6) शो'बअे तप्रीज

“अल मदी-नतुल इल्मिया” की अक्वलीन तरज्जुह सरकारे

આ'લા હઝરત ઈમામે અહલે સુન્નાત, અઝીમુલ બ-ર-કત, અઝીમુલ મર્તબત, પરવાનએ શમ્એ રિસાલત, મુજદિદે દીનો મિલ્લત, હામિયે સુન્નાત, માહિયે બિદ્અત, આલિમે શરીઅત, પીરે તરીકત, બાઈસે ખૈરો બ-ર-કત, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અલ્લાજ અલ હાફિઝ અલ કારી શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن كِي गिरां माया तसानीई को अस्से હાઝિર કે તકાઝોં કે મુતાબિક હતલ વુસ્અ સહ્લ ઉસ્લૂબ મેં પેશ કરના હૈ. તમામ ઈસ્લામી ભાઈ ઓર ઈસ્લામી બહનેં ઈસ ઈલ્મી, તહકીકી ઓર ઈશાઅતી મ-દની કામ મેં હર મુફ્કિન તઆવુન ફરમાએ ઓર મજલિસ કી તફ સે શાએઅ હોને વાલી કુતુબ કા ખુદ ભી મુતાલઆ ફરમાએ ઓર દૂસરોં કો ભી ઈસ કી તરગીબ દિલો.

અલ્લાહ ﷻ “દા'વતે ઈસ્લામી” કી તમામ મજલિસ વ શુમૂલ “અલ મદી-નતુલ ઈલ્મિયા” કો દિન ગ્યારહવીં ઓર રાત બારહવીં તરક્કી અતા ફરમાએ ઓર હમારે હર અમલે ખૈર કો ઝેવરે ઈખ્લાસ સે આરાસ્તા ફરમા કર દોનોં જહાં કી ભલાઈ કા સબબ બનાએ હમેં ઝેરે ગુમ્બદે ખઝ્રા શહાદત, જન્નતુલ બકીઅ મેં મદફન ઓર જન્નતુલ ફિરદૌસ મેં જગહ નસીબ ફરમાએ.

امين بجاه النبي الامين صلى الله تعالى عليه واله وسلم



૨-મઝાનુલ મુબારક 1425 હિ.

इंडरिस

उन्वान	संख्या नम्बर	उन्वान	संख्या नम्बर
निफ़ाक व नार से नज़ात	9	(6) जन्त में दाखिल न हो सकेगा	25
में इस से बेहतर हूँ	10	इस तकब्बुर का क्या फायदा !	25
तकब्बुर ने कहीं का न छोड़ा !	11	तकब्बुर की 19 अवामात	27
तुम इसी हालत पर रहना	12	अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले	27
सय्यिदुना जिब्राईल की गिर्या व ज़री	12	अ-जमिय्यों की तरह पड़े न रखा करो	28
येह इब्रत की ज़ा है	12	बयान कदा उदीस की तशरीह	28
तकब्बुर का इल्म सीपना फ़र्ज है	13	अपने सरदार के पास उठ कर जाओ	29
तकब्बुर से बयने की इज़ीलत	14	सहाबअे किराम पड़े हो कर	
इस रिसाले में क्या है ?	15	ता'ज़ीम किया करते	29
तकब्बुर किसे कहते हैं ?	16	दूरी में इजाफ़ा होता रहता है	30
तकब्बुर की 3 अक़साम	16	जब इज़ाम बराबर आ कर बैठा.....	31
किरऔन डूब मरा	16	देहातियों को नीचे न बैठने दिया	32
नमज़ूद की मख़र के ज़रीअे उलाक़त	17	अनोपी छीक	35
तकब्बुर करने वाले की मिसाल	19	छीक की ब-र-कतें	35
इन्सान की हैसियत ही क्या है ?	19	तकब्बुर के मुफ़्तलिफ़ अन्दाज़	36
आशिकाने रसूल के भीठे बोल की ब-रकात	20	तकब्बुर के नतीजे में पैदा होने वाली बुराईयां	37
तकब्बुर के 6 नुक़सानात	22	तकब्बुर से ज़ान छुड़ा लीजिये	37
(1) अल्लाह तआला का ना पसन्दैदा भन्दा	22	तकब्बुर पर उतारने वाले 8	
(2) म-दनी आका का मु-तकब्बिर		अस्बाब और उन का इलाज	39
के लिये इजहार नफ़रत	23	इल्म से पैदा होने वाले तकब्बुर के इलाज	40
(3) बद तरीन शप्स	23	अहले इल्म के तकब्बुर में मुतला होने का सबब	40
(4) कियामत में रुस्वाई	24	आलिम का फुद को "आलिम" समजना	41
(5) टप्ने से नीचे पाज़ामा लटकाना	24	फुद को आलिम कहने वाला ज़ाहिल है !	42

उन्वान	संख्या नम्बर	उन्वान	संख्या नम्बर
सब से ज़ियादा अज़ाब	43	दूसरा ईमाम तलाश कर लो	56
भुट को लकीर समजने का तरीका	43	भावो दौलत से पैदा होने वाले तक़्बुर का ईलाज	57
काफ़िर को काफ़िर कलना ज़रूरी है	45	बिला हिसाब ज़हन्नम में दाबिला	57
येह मुज़ से बेहतर है	46	आज़िज़ी करने वाले दौलत मन्ह के लिये पुश भबरी	58
गैर नाफ़ेअ ईल्म से भुदा की पनाह	46	भावदार मु-तक़्बिर को अनोपी नसीहत	58
कियामत के यार सुवालात	46	हसब व नसब की वजह से पैदा	
भुजुगानि दीन की आज़िज़ी की हस हिकायात	47	होने वाले तक़्बुर का ईलाज	59
(1) काश मैं परिन्दा होता	47	आबाओ अज़दाह पर इफ़्र मत करो	59
(2) काश ! मैं इलदार पेड होता	47	9 पुशतें ज़हन्नम में ज़ाअंगी	60
(3) मैं इन की आज़िज़ी देबना याहता था	47	हुस्नो ज़माल के तक़्बुर के ईलाज	60
(4) इसी वजह से तो वोह "मालिक" हूँ	48	हज़रते लुक़्मान लकीम की नसीहत	61
(5) ईमाम इफ़्रुल ईस्लाम के आंसू	48	हज़रते अबूअर और बिलाव की हिकायात	61
(6) कैदियों के साथ भाना	49	हुस्न वावा नज़ात पायेगा.... मगर कब?	62
(7) कुत्ते के लिये रास्ता छोड दिया	50	काम्याबियों की वजह से पैदा होने	
(8) अपने दिल की निगरानी करते रहो	50	वाले तक़्बुर का ईलाज	63
(9) जब दरियाओदिजवा ईस्तिक्बालकेलियेबढा....	51	ताक़्त व कुव्वत की वजह से पैदा	
(10) अब मज़ीद की गुन्ज़ाईश नहीं	51	होने वाले तक़्बुर का ईलाज	64
ईबाहत से पैदा होने वाले तक़्बुर का ईलाज	52	ओहदा व मन्सब की वजह से पैदा	
ईसराईली ईबाहत गुज़ार और गुनहगार	53	होने वाले तक़्बुर का ईलाज	64
बद नसीब आबिद	54	5 हिकायात	65
मेरे सबब हुलां भरबाह हो गया !	54	(1) अपनी औकात याद रखता हूँ	65
लोगों की तक़्लीफ़ों का सबब मैं हूँ !	55	(2) सारी सलतत की क्रीमत अक़ गिलास पानी	66
तुम्हें तअज़ुब नहीं होना चाहिये	55	(3) सालारे लश्कर को नसीहत	67

उन्वान	सर्फडा नम्बर	उन्वान	सर्फडा नम्बर
(4) बुलन्दी याहने वाले की रुस्वाँ	67	(13) घर के काम कीजिये	78
(5) मेरे मकाम में कोई कमी तो नहीं आँ	68	घर के काम काज करना सुन्नत है	79
तकब्बुर के मजीद ईलाज	68	बीज का मादिक उसे उठाने का जियादा हकदार है	79
(1) बारगाहे ईलाही में छाजिरी को याद रबिये	68	लकरियों का गहा	79
(2) हुआ कीजिये	69	कमाल में कोई कमी नहीं आती	80
(3) अपने उयूब पर नजर रबिये	69	ईयालदार को अपना सामान पुद उठाना मुनासिब है	80
(4) नुकसानात पेशे नजर रबिये	70	सदरुशरीअह अपने घर के काम किया करते	80
(5) आजिजी ईप्तिहार कर लीजिये	70	(14) पुद मुलाकात के लिये जाँये	81
भिन्जीर से बढतर	70	(15) गरीबों की दा'वत भी कबूल कीजिये	81
हर अक के सर में लगाम	71	अैसी दा'वत रोज कबूल करुं	81
क्या येह भी मुज से बेहतर हो सकता है!	71	गरीबों पर भुसूसी करम	84
आजिजी का अक पडलू	72	(16) लिबास में सादगी ईप्तिहार कीजिये	84
आजिजी किस हद तक की जाँये ?	72	काश ! येह लिबास नर्म न होता	85
(6) सलाम में पडल कीजिये	72	अमीरे अहले सुन्नत की सादगी	86
सलाम में पडल करने वाला तकब्बुर से बरी है	73	(17) म-दनी माहोल अपना लीजिये	87
कुर्बे ईलाही का हकदार	73	ईमां की बहार आँ ईजाने मदीना में	88
आँवा हजरत की सलाम में पडल की आदते मुबा-रका	74	क्या आप नेक बनना याहते हैं ?	90
अमीरे अहले सुन्नत की आदते करीमा	74	آلكا نه پواءه में बिशारत दी	91
(7) अपना सामान पुद उठाँये	75	(18) सात मुईद अवराद	92
(8) ईन आ'माल को ईप्तिहार कीजिये	75	ईलाज के बा वुजूद ईफाका न हो तो ?	93
बकरी की ખाल पर बैठने की ब-र-कत	75	5 मु-तर्फरक म-दनी हूल	94
(9) स-दका दीजिये	76	मआपजो मराजेअ	96
(10) हक बात तस्लीम कर लीजिये	76		
(11) अपनी ग-लती मान लीजिये	76		
ग-लती का अे'तिराफ	76		
अमीरे अहले सुन्नत का म-दनी अन्दाज	77		
(12) नुमायां हैसियत के तालिब न बनिये	78		

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ، بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 तक़व्वुर

शैतान आप को बड़ोत रोकेंगा मगर आप येह रिसाला पढ लीजिये
 إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप को अन्दाजा डो जायेगा के शैतान आप को क्यूं नही
 पढने दे रहा था.

निफ़ाक व नार से नज़ात

शैभे तरीकत, अमीरे अडले सुन्नत, जानिये दा'वते ईस्लामी
 डउरत अद्लामा मौलाना अबू बिलाव मुहम्मद ईद्ल्यास अत्तार
 कादिरि र-उवी जियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के बयान के तडरीरी गुलदस्ते
 "में सुधरना याडता डूं"¹ में मन्कूल है के डउरते सय्यिदुना ईमाम
 सभावी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ नकल इरमाते हैं : सरकारे दौ आलम
 ने ईशाई इरमाया : "जिस ने मुज पर अेक बार
 दुइदे पाक भेजा अद्लाड عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रडमतें नाजिल इरमाता
 है और जो मुज पर दस बार दुइदे पाक भेजे अद्लाड عَزَّوَجَلَّ उस पर
 सो रडमतें नाजिल इरमाता है और जो मुज पर सो बार दुइदे पाक
 भेजे अद्लाड عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंभों के दरमियान लिख देता है के
 येह बन्दा निफ़ाक और दौऊभ की आग से बरी है और क्रियामत के
 दिन उस को शहीदों के साथ रभेगा."

(الْقَوْلُ الْبَدِيعِ ص ٢٣٣ مؤسسة الريان بيروت)

है सभ दुआओं से बढ कर दुआ दुइदो सलाम
 के दइअ करता है डर ईक बला दुइदो सलाम
 صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

1. येह रिसाला (41 सफ़हात) मक-त-अतुव मदीना से डसिल कर के डरर पढिये.

ईब्लिस को अपनी बारगाह से धुत्कारते हुअे ईशाद इरमाया :

तर-४-मअे कन्जुल ईमानः तो जन्त
 فَأَخْرَجْنَا مِنْهَا قَائِلًا جِيمٌ ۖ وَإِنَّ عَلَيْكَ
 से निकल जा के तू रांधा (ला'नत किया)

لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ۝ गया और बेशक तुज पर मेरी ला'नत
 है किया मत तक.

(प २३, सूरह ७७: ७८)

तकब्बुर ने कहीं का न छोडा !

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! आप ने मुला-हजा इरमाया के किस तरह तकब्बुर के भाईस ईब्लिस (या'नी शैतान) को अपने ईमान से हाथ धोने पडे ! शैतान जिस का नाम पहले ईजाजील था,¹ ईब्लिदा ही से सरकश व ना इरमान न था बल्के उस ने हजारों साल ईबादत की, जन्त का भजान्थी रहा,² येह जिन्न था³ मगर अपनी ईबादत व रियाजत और ईल्मियत के सबभ मुअद्लिमुल म-लकूत या'नी किरिशतों का उस्ताज बन गया और ईस कदर मुकर्ब था के बारगाहे फुदा वन्दी में मलाअेका के पहलू ब पहलू हाजिर होता था. मगर यन्द् घडियों के तकब्बुर ने उसे कहीं का न छोडा ! हुकमे ईलाही عَزَّوَجَلَّ की ना इरमानी की वजह से उस की बरसों की ईबादतें अकारत (या'नी बेकार) और हजारों साल की रियाजतें पामाल हो गई, जिल्दतो रुस्वाई उस का मुकदर बनी, हमेशा हमेशा के दिये ला'नत का तौक उस के गले पड गया और वोह जहन्नम के दाईमी (या'नी हमेशा हमेशा के) अजाब का मुस्तलिक ठहरा. (الْأَمَانُ وَالْخَفِيظُ)

१: الجامع لاحكام القرآن، البقرة، تحت الآية ३६، ج १، ص २६६

२: الجامع لاحكام القرآن، البقرة، تحت الآية ३६، ج १، ص २६७

३: پارہ ۱۵، الکھف، ۵۰

तुम ईसी डालत पर रहना

मन्कूल है के जब ईब्लिस के मरदूद होने का वाकिआ हुआ तो उजरते सय्यिहुना जिब्राईल और उजरते सय्यिहुना भीकाईल **رَوَى عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ** रोने लगे तो रब तआला ने दरयाइत किया (डालांके सभ कुछ जानता है) के “तुम क्यूं रोते हो?” उन्हों ने अर्ज़ की : “अै रब **عَزَّوَجَلَّ** ! हम तेरी **پۇڤۇيا** तदबीर से बे भौइ नही हैं.” रब्बुल ईबाद **عَزَّوَجَلَّ** ने ईशाद इरमाया : “तुम ईसी डालत पर रहना.”

(الرسالة القشيرية، باب الخوف، ص 166)

सय्यिहुना जिब्राईल **عَلَيْهِ السَّلَام** की गिर्या व ज़ारी

नबिय्ये अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने उजरते सय्यिहुना जिब्राईल **عَلَيْهِ السَّلَام** को देखा के ईब्लिसे ખसीस के अन्जामे बद से ईब्रत गीर हो कर का'बअे मुशर्रफ़ा के पर्दे से लिपट कर निहायत गिर्या व ज़ारी के साथ **अद्लाड** **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में येड हुआ कर रहे हैं : “**يَا'نِي اَللهِ وَسَيِّدِي لَا تَغَيِّرْ اِسْمِي وَلَا تَبَيِّلْ جِسْمِي**” : “अद्लाड ! अै मेरे मालिक **عَزَّوَجَلَّ** ! कहीं मेरा नाम नेकों की इइरिस्त से न निकाल देना और कहीं मेरा जिस्म अडले अता के गुमरे से निकाल कर अडले गजब के गुरौड में शामिल न इरमा देना.” (ص 108 منهاج العابدين)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيْب! **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد**

येड ईब्रत की जा है

भीठे भीठे ईस्लामी त्माईयो ! ज़रा सोचिये के तक़्क़ुर किस कदर षतरनाक बातिनी मरज है जिस की वजह से “**मुअव्लिमुल म-लकूत** या'नी इरिश्तों के उस्ताज” का रुत्बा पाने वाले ईब्लिस (शैतान) ने **پۇڤۇيا** रडमान **عَزَّوَجَلَّ** की ना इरमानी की और अपने

मक़ाम व मन्सब से महज़म हो कर ज़हन्नमी करार पाया. एब्दीस का येह अन्जाम देष कर ज़ब हज़रते सय्यिदुना जिब्रिहिल व मीकाईल عَلَيْهِمَا السَّلَام जैसे मुक़र्रब व मा'सूम फिरिश्ते षौफ़े फ़ुदा ʾعَزَّوَجَلَّ से अशक़बार हो ज़अें और बारगाहे एलाही ʾعَزَّوَجَلَّ में आइय्यत व सलामती की मुनाज़ात (या'नी दुआअें) करना शुज़्अ कर दें तो हम जैसे एस्यां शिआरों (या'नी गुनहगारों) को तो अल्लाह ʾعَزَّوَجَلَّ की फ़ुज़्या तदबीर से ब द-र-ज़अे औला उरना याहिये !

तेरे षौफ़े से तेरे उर से हमेशा

में थर थर रडूँ कांपता या एलाही

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْرُ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

तक़्क़ुबुर का एल्म सीषना इज़ है

भीठे भीठे एस्लामी भाएयो ! एस जदीद साएन्सी दौर में मीडिया (ज़ाएअे एब्बाग) की वुस्अतों ने हर दूसरे शप्स को मा'लूमात का हरीस बना दिया है, आज हम अपने एर्ट गिर्ट, अडोस पडोस, महल्ले और गाँ, शहर और मुल्क, षित्ते बल्ले सारी दुन्या की मा'लूमात हासिल करने का शौक तो रभते हैं के इलां मुल्क में एलेक्शन हुअे तो किस सियासी पार्टी को अकसरिय्यत हासिल हुए ! इलां मेय कौन सी टीम ज़ती ! इलां जगह जल्लला या तूज़ान आया तो कितने लोग हलाक हुअे ! इलां मुल्क का सदर, या इलां सूबे का गवर्नर कौन है ! वगैरा वगैरा. मगर अइसोस एस के मुकाबले में हमारी दीनी मा'लूमात उमूमन सत्दी नौएय्यत की होती हैं फिर उन में से दुरुस्त कितनी होती हैं ? कोए साहबे एल्म हमारा एम्तिहान ले तो पता यले. याद रभिये ! दुन्यवी मा'लूमात की कसरत पर हमें आभिरत में कोए जज़ा मिलेगी न कम होने पर कोए सज़ा ! अलबत्ता ब कदरे ज़रत दीनी मा'लूमात न होना नुकसाने आभिरत का भाएस है

क्यूंके इस जहाने फ़ानी (या'नी दुन्या) में की गई नेकियां जहाने आभिरत की आबाद करी जबके गुनाह बरबादी का सबब हैं और नेकियों और गुनाहों की पहचान के लिये इल्मे दीन का होना बहोत जरूरी है. जहन्नम में ले जाने वाले गुनाहों में से अेक तक़्बुर भी है जिस का इल्म सीखना इर्क है युनान्चे आ'ला उजरत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानअे शम्मे रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इतावा र-जविय्या जिल्द 23 सफ़हा 624 पर लिखते हैं: “मुहर्माते बातिनिय्या (या'नी बातिनी मन्ूआत म-सलन) तक़्बुर व रिया व उजुब व हसद व गैरहा और उन के मुआ-लजात (या'नी इलाज) के इन का इल्म (या'नी जानना) भी हर मुसल्मान पर अहम इराईज से है.”

(فتاوى رضوية مخرجه، ج 23، ص 624)

इस लिये हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को याहिये के पहले तक़्बुर की ता'रीफ़, तबाह कारियां, अक़साम, अस्बाब, अलामात और इलाज वगैरा के बारे में मुकम्मल मा'लूमात हासिल कर के दियानत दारी के साथ अपना मुहा-सबा करे फिर अगर इस बातिनी गुनाह में गरिफ़तार होने का अेहसास हो तो हाथों हाथ अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करे और इलाज के लिये त्तरपूर कोशिशें शुर्अ कर दे.

तक़्बुर से बचने की इत्तीलत

मफ़्तने जूदो साभावत, पैकरे अ-ज-मतो शराफ़त صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का इरमाने आलीशान है: “जो शप्स तक़्बुर, पियानत और दैन (या'नी कर्ज वगैरा) से बरी हो कर मरेगा वोह जन्नत में दाखिल होगा.”

(جامع الترمذی، کتاب السیر، باب ماجاء فی الغلول، الحدیث 1078، ج 3، ص 208)

ईस रिसाले में क्या है ?

ईस रिसाले में तकब्बुर की मा'लूमात को कदरे आसान अन्दाज में उन्वानात के तद्दत हवाला ज़ात के साथ पेश करने की कोशिश की गई है ताके कम ईल्म भी ईस से फ़ायेदा हासिल कर सकें, फिर भी ईल्म बहोत मुश्किल चीज़ है येह मुश्किन नहीं के ईल्मी दृशवारियां बिल्कुल जाती रहें, जो बात समज़ में न आये, समज़ने के लिये उ-लमाये किराम **دامت فيوضهم** से रुजूअ कीजिये. तकब्बुर से नज़ात का ज़जबा पाने के लिये शैखे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा **मौलाना मुहम्मद ईल्य़ास अत्तार कादिरि** **دامت فيوضهم** के केसिट बयानात "मग़ज़र बादशाह", "तकब्बुर किसे कहते हैं?", "तकब्बुर की अलामात", "तकब्बुर के अस्बाब" और मुबद्लिगे दा'वते ईस्लामी व रुक़्ने शूरा व निगराने पाकिस्तान ईन्तिज़ामी काबीना हाज़ि मुहम्मद शाहिद अत्तारी **سَلَمَةُ النَّبِيِّ** का बयान "बातिनी अमराज़ का ईलाज़" सुनना भी बेहद मुफ़ीद है.

ईस अहम रिसाले को न सिर्फ़ षुद पढिये बल्के दीगर ईस्लामी भाईयों को भी पढने की तरगीब दे कर नेकी की दा'वत को आम करने का सवाब कमाईये. अल्लाह तआला से दुआ है के हमें "अपनी और सारी दुन्या के लोगों की ईस्लाह की कोशिश" करने के लिये म-दनी ईन्आमात पर अमल और "म-दनी काफ़िलों" का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक अता फ़रमाये.

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शो'बअे ईस्लाही कुतुब (मजलिसे अल मदी-नतुल ईल्मिया)

6 जुल का'दतिल हराम सि. 1430 अ मुताबिक 26 अक्तूबर सि. 2009 ई.

तकब्बुर किसे कहते हैं ?

पुष्ट को अङ्गल, दूसरों को उकीर जानने का नाम तकब्बुर है।

युनान्थे रसूले अकरम, नूरे मुजस्सिम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशादिरमाया : “ (الْكِبْرُ بَطْرُ الْحَقِّ وَغَمُطُ النَّاسِ) ” या'नी तकब्बुर उक की मुभा-लफ्त और लोगों को उकीर जानने का नाम है।”

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب تحريم الكبر وبيانہ، الحديث: ٩١، ص ٦١)

ईमाम रागिब अस्फहानी लिखते हैं :

“يَا'نِي التَّكَبُّورُ يَهْدِي لِكَيْ تَعْرِىَ الْإِنْسَانَ نَفْسَهُ أَكْبَرَ مِنْ غَيْرِهِ”
ईन्सान अपने आप को दूसरों से अङ्गल समजे।

(المُفْرَدَاتُ لِلرَّائِبِ ص ٦٩٧)

मदीना: जिस के दिल में तकब्बुर पाया जाये उसे “मु-तकब्बिर” कहते हैं।

“मक्का” के तीन छुड़के की निरूपत से तकब्बुर की 3 अकसाम

(1) अल्लाह के मुकाबले में तकब्बुर

तकब्बुर की ये छुड़के किस्म कुड़ है, 1 जैसे फिरऔन का तकब्बुर के उस ने कहा था :

أَنَا رَبُّكُمْ الْأَعْلَى ۖ فَآخِذُوا بِاللَّهِ كَالْأَخِرَةِ وَالْأُولَى ۖ
तर-ज-मअे कजुल ईमान : मैं तुम्हारा सभ से गिया रब हूं तो अल्लाह ने उसे दुन्या व आभिरत दोनों के अजाब में पकडा। (प ३०, النزعت: २६)

फिरऔन रूब मरा

फिरऔन की छिदायत के लिये अल्लाह के मुकाबले ने उजरते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह और उजरते सय्यिदुना हाइन

عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ को भेजा मगर उस ने उन दोनों को ज़ुटलाया तो रब عَزَّوَجَلَّ ने उसे और उस की कौम को दरियाअे नील में गरक कर दिया. (الحديقة الندية، ج ١، ص ٥٤٩)

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 853 स-इहात पर मुश्तमिल किताब, "जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल" सइहा 132 पर है : मुइस्सिरीने किराम رحمة الله عليهم इरमाते हैं : "अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरौन को मरे हुअे बैल की तरह दरिया के कनारे पर इंक दिया ताके वोह बाकी मांदा बनी ईसराईल और दीगर लोगों के लिये ईअ्रत का निशान बन जाअे और उन पर येह बात वाजेह हो जाअे के जो शअ्स अलिम हो और अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की जनाब में तक़्क़ूर करता हो उस की पकड ईस तरह होती है के उसे जिल्लत व ईहानत की पस्ती में इंक दिया जाता है." (الزواجر عن اقتراف الكبائر (عربی)، ج ١، ص ٧١)

नमरूद की मखर के जरीअे उलाकत

नमरूद भी तक़्क़ूर की ईसी किस्म का शिकार हुवा, ईस ने भुदाई का दा'वा किया तो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उअरते सय्यिदुना ईब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को नमरूद की तरफ़ भेजा तो उस ने आप عَلَيْهِ السَّلَام को ज़ुटलाया हत्ता के अद्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तक़्क़ूर करते हुअे कहने लगा : "मैं आस्मान के रब को कत्ल करूंगा (مَلَأَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ) और ईस ईरादे से आस्मान की तरफ़ तीर भरसाअे, जब तीर भून आलूदा हो कर वापस जमीन पर आ गिरे तो उस ने अपनी जहालत, बुग़्ज व अदावत और कुफ़ की शामत की वजह से गुमान किया के مَلَأَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ "उस ने आस्मान के रब को कत्ल कर दिया." हत्ता के अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नमरूद की तरफ़ अेक मखर को भेजा जो नाक के जरीअे उस के हिमाग में घुस गया और अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस मग़ूर को अेक

मा'मूली मख़रके ज़रीअे हलाक़ इरमा दिय़ा.”

(الحديقة الندية، ج ١، ص ٥٤٩)

(2) अल्लाहु रब्बुल ईज़्जत के रसूलों के मुकाबले में

ईस की सूरत येह है के तक़ब्बुर, ज़हलत और जुज़्ज व अदावत की बिना पर रसूल की पैरवी न करना या'नी फ़ुद को ईज़्जत वाला और जुलन्द समज़ कर यूं तसव्वुर करना के आम लोगों जैसे अक़ ईन्सान का हुक़्म कैसे माना जाअे, जैसा के भा'ज़ कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रउीक़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बारे में हकारत से कहा था :

○ هَذَا الَّذِي بَعَثَ اللهُ رَسُولًا

तर-ज-मअे कन्ज़ुल ईमान : क्या ये है
जिन को अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा ?

(پ ١٩، الفرقان: ٤١)

لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَى رَجُلٍ مِّنْ

तर-ज-मअे कन्ज़ुल ईमान : क्यूं न
उतारा गया येह कुरआन ईन दो शहरों

○ الْقَرِيَّتَيْنِ عَظِيمِ

के किसी बडे आदमी पर ?

(الحديقة الندية، ج ١، ص ٥٥٠) (پ ٢٥، الرخرف: ٣١)

नबी के मुकाबले में भी तक़ब्बुर कुफ़ है.

(مرآة المناجیح، ج ٦، ص ٦٥٥)

(3) बन्दों के मुकाबले में

या'नी अल्लाह व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ईलावा मफ़्लूक़ में से किसी पर तक़ब्बुर करना, वोह ईस तरह के अपने आप को बेहतर और दूसरे को हकीर जान कर उस पर बडाई याहना और मुसावात (या'नी बाहम बराबरी) को ना पसन्द करना, येह सूरत अगर्ये पहली दो सूरतों से कम तर है मगर ईस का गुनाह भी बडोत बडा है क्यूंके किब्रियाई और अ-ज़मत बादशाहे

इकीकी عَزَّوَجَلَّ ही के लाईक है न के आज़िज़ और कमज़ोर बन्दे के.

(احياء العلوم، ج ۳، ص ۴۲۰ ملخصاً)

तक़्बुर करने वाले की मिसाल

तक़्बुर करने वाले की मिसाल ऐसी है के कोई गुलाम बगैर
 ईजाज़त बादशाह का ताज पहन कर उस के शाही तप्त पर बिराजमान
 हो जाये, तो जिस तरह येह गुलाम बादशाह की तरफ़ से सप्त सज़ा
 पायेगा बिल्कुल ईसी तरह “सि-इते किब्र” में शिर्कत की मज़मूम
 कोशिश करने वाला शप्स अब्द्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से सज़ा का मुस्तहिक
 होगा. युनान्ये नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सिम عَلَيْهِ وَالصَّلَام ने
 इरमाया : रब عَزَّوَجَلَّ ईशाद इरमाता है : “किब्रियाई मेरी यादर है,
 लिहाज़ा ज़ो मेरी यादर के मुआ-मले में मुज़ से जगरेगा मैं उसे पाश
 पाश कर दूंगा.”

(المستدرک للحاکم، کتاب الایمان، باب اهل الجنة المغلوبون..... الخ، الحديث: ۱۰، ج ۱، ص ۲۳۵)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! रब तआला का किब्रियाई को
 अपनी यादर इरमाना हमें समजाने के लिये है के जैसे अक यादर को
 दो नहीं ओढ सकते, यूंही अ-जमत व किब्रियाई सिवाये मेरे दूसरे
 के लिये नहीं हो सकती.

(ماخوذ از مراسم الحج، ۱۶، ص ۱۵۹)

ईन्सान की हैसियत ही क्या है ?

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! ईन्सान की पैदाईश बटबूदार
 नुई (या'नी गन्दे कतरे) से होती है अन्जामे कार सज़ा हुवा मुर्दा है
 और ईस कदर बेबस है के अपनी लूक, प्यास, नींद, भुशी, गम,
 याद दाश्त, बीमारी या मौत पर ईसे कुछ ईप्तियार नहीं, ईस
 लिये ईसे याहिये के अपनी अस्लियत, हैसियत और औकात को
 कभी इरामोश न करे, वोह ईस दुन्या में तरकिक्यों की मन्जिलें तै
 करता हुवा कितने ही बडे मकाम व मर्तबे पर क्यूं न पलोंय जाये,
 पालिके कौनो मक़ां عَزَّوَجَلَّ के सामने ईस की हैसियत कुछ भी नहीं है,
 साहिबे अकल ईन्सान तवाज़ोअ और आज़िज़ी का यलन ईप्तियार

करता है और येही यलन इस को दुन्या में बडाई अता करता है वरना इस दुन्या में जब भी किसी इन्सान ने फिरअौनियत, काइरनियत और नमइदियत वाली राह पकडी है बसा अवकात अल्लाह तआला ने उसे दुन्या ही में अैसा जलीलो प्वार किया है के उस का नाम मकामे ता'रीफ़ में नहीं बतौरै मजम्मत लिया जाता है. विहाजा अकलो इइम का तकाजा येह है के इस दुन्या में उंयी परवाज के लिये इन्सान जते ज पैवन्दे जमीन हो जाअे और आजिजी व इन्किसारी को अपना ओढना बिछोना बना ले फिर देबिये के अल्लाहु रब्बुल इज्जत उस को किस तरह इज्जत व अ-जमत से नवाजता है और उसे दुन्या में मइबूबियत और मकबूलियत का वोह आ'ला मकाम अता करता है जो उस के इजलो करम के बगैर मिल जाना मुम्किन ही नहीं है.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

आशिकाने रसूल के भीठे बोल की ब-रकात

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ "इंजाने सुन्नत" जिल्द 2 के 499 स-इलात पर मुश्तमिल बाब, "गीबत की तबाह कारियां" सइहा 223 पर शैभे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हजरत अल्लामा मौलाना अबू बिलाह मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ लिखते हैं : शहर कुसूर (पंजाब, पाकिस्तान) के अेक नौ जवान इस्लामी भाई की तहरीर बित्तसरुई पेश करता हूं : "मैं उन दिनों मेट्रिक का तालिबे इल्म था, बुरी सोहबत के बाईस जिन्दगी गुनाहों में बसर हो रही थी, मिजाज बेहद गुसीला था और बह तमीजी की आदते बह इस हद तक पछोंय चुकी थी के वालिद साहिब कुजा दादाजान और दादीजान के सामने भी केंयी की तरह जमान यलाता. अेक रोज तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी का अेक म-दनी काइला हमारे महल्ले की मस्जिद में आ पछोंया, ખુદા جَسْر کا करना अैसा हुवा के मैं आशिकाने रसूल से मुलाकात के लिये पछोंय गया. अेक इस्लामी भाई ने

ईन्ज़िराही कोशिश करते हुए मुझे दर्स में शिर्कत की दा'वत पेश की, उन के भीठे बोल ने मुझ पर ऐसा असर किया के मैं उन के साथ बैठ गया. उन्होंने ने दर्स के बा'द ईन्तिहाई भीठे अन्दाज़ में मुझे बताया के यन्द् ही रोज़ बा'द "सहराअे मदीना" मदी-नतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में दा'वते ईस्लामी का तीन रोज़ा बैनल अक्वामी सुन्नतों भरा ईजतिमाअ हो रहा है आप भी शिर्कत कर लीजिये. उन के दर्स ने मुझ पर बहोत अच्छा असर किया था लिहाज़ा मैं ईन्कार न कर सका. यहां तक के मैं सुन्नतों भरे ईजतिमाअ (सहराअे मदीना, मुलतान) में हाज़िर हो गया. वहां की रौनकें और ब-र-कतें देख कर हैरान रह गया, ईजतिमाअ में होने वाले आषिरी बयान "गाने बाजे की डोलनाकियां" सुन कर मैं थर्रा उठा और आंभों से आंसू ज़री हो गये. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ मैं गुनाहों से तौबा कर के उठा और दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से वाबस्ता हो गया. मेरी म-दनी माडोल से वाबस्तगी से हमारे घर वालों ने ईत्मीनान का सांस लिया, दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल की ब-र-कत से मुझ जैसे बिगडे हुए बद्द अप्लाक और ખस्ता ખराબ नौ जवान में म-दनी ईन्किलाब से मु-तअस्सिर हो कर मेरे बडे भाई ने भी दाढी मुबारक रખने के साथ साथ ईमामा शरीफ़ का ताज भी सज़ा लिया. मेरी अेक ही बहन है. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ मेरी ईकलौती बहन ने भी म-दनी बुरकअ पहन लिया, بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ घर का दर ईर्द सिव्सिलअे आलिया कादिरिया २-ऊविया में दाખिल हो कर सरकारे गौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ का मुरीद हो गया. और उस ईन्ज़िराही कोशिश करने वाले मेरे मोडसिन ईस्लामी भाई के भीठे बोल की ब-र-कत से मुझ पर अल्लाहु आ'ज़म بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ने ऐसा करम इरमाया के मैं ने कुरआने पाक डिफ़्ज़ करने की सआदत हासिल कर ली और दर्से निज़ामी (आलिम कोसी) में दाखिला ले लिया और येह बयान

दोते वक्त द-र-जअे साविसा या'नी तीसरी क्लास में पढोंय युका हूं.
 عَلَّمَهُ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ दा'वते ईस्लामी के म-दनी कामों के तअद्लुक से अलाकाई
 काईला जिम्मादार हूं. मेरी नियत है के शा'बानुल
 मुअज़्ज़म सि. 1427 हि. से यकमुश्त 12 माह के लिये म-दनी काईलों
 में सफ़र करूंगा.”

दिल पे गर जंग लो, घर का घर तंग लो, डोगा सब का भला, काईले में यलो
 औसा कैअन लो, डिङ्गल कुरआन लो, कर के डिम्मत अर, काईले में यलो
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ !

“पनाहे भुदा” के ९ छुड़के की निस्बत से तकब्बुर के ६ नुकसानात

ईस बातिनी गुनाह के कसीर दुन्यवी व उर्षवी नुकसानात हैं, जिन
 में से ६ येह हैं :

(1) अद्लाह तआला का ना पसन्दीदा बन्द

रब्बे काअेनात तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं
 इरमाता जैसा के सूरअे नह्ल में ईशाद होता है :

إِنَّهُ لَا يُحِبُّ السُّتَكْبِرِينَ ۝ २१ तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : बेशक वोह
 मगरूरो को पसन्द नहीं इरमाता.

(प १६, النحل: २३)

शहन्शाहे भुश भिसाल, पैकरे छुस्नो जमाल
 عَلَّمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईध्रत निशान है : “अद्लाह
 मु-तकब्बिरीन (या'नी मगरूरो) और ईतरा कर यलने वालों को ना
 पसन्द इरमाता है.”

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، الحدیث: ۷۷۲۷، ج ۳، ص ۲۱۰)

(2) म-दनी आका صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का मु-तक़्बिर के लिये ईज्जारे नफ़रत

सरकारे मदीना, राहते क़्लबो सीना صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने फ़रमाया : “बेशक़ क़ियामत के दिन तुम में से मेरे सब से नज़दीक और पसन्दीदा शप्स वोह होगा जो तुम में से अप्लाक में सब से ज़ियादा अख़्फ़ा होगा और क़ियामत के दिन मेरे नज़दीक सब से काबिले नफ़रत और मेरी मजलिस से दूर वोह लोग होंगे जो वाख़ियात बकने वाले, लोगों का मज़ाक़ उठाने वाले और मु-तक़ैख़िक हैं.”

साहाबअे क़िराम عليهم الرضوان ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ! बेख़ूदा बक़्वास बकने वालों और लोगों का मज़ाक़ उठाने वालों को तो हम ने जान लिया मगर येह मु-तक़ैख़िक कौन हैं?” तो आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने ईर्शाह़ि फ़रमाया : “ईस से मुराह़ डर तक़्बुर करने वाला शप्स है.”

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلوة، الحديث: ٢٠٢٥، ج ٣، ص ٤١٠)

न उठ सकेगा क़ियामत तलक़ फ़ुदा की कसम
के जिस को तूने नज़र से गिरा के छोड दिया

(3) बह तरीन शप्स

तक़्बुर करने वाले को बह तरीन शप्स करार दिया गया है युनान्थे हज़रते सय्यिहुना हुज़ैफ़ा رضى الله تعالى عنه ईर्शाह़ि फ़रमाते हैं के हम दाफ़ेअे रन्जो मलाल, साख़िबे जूहो नवाल صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के साथ अेक जनाजे में शरीक़ थे के आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने ईर्शाह़ि फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें अल्लाह عز وجل के बह तरीन बन्दे के बारे में न बताऊं ? वोह बह अप्लाक़ और मु-तक़्बिर है, क्या मैं तुम्हें अल्लाह عز وجل के सब से बेहतरीन बन्दे के बारे में न बताऊं ? वोह कमज़ोर और ज़र्ह़ि समज़ा जाने वाला बोसीदा लिबास पहनने

वाला शप्स है लेकिन अगर वोह किसी बात पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कसम उठा ले तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की कसम जरूर पूरी करमाये.”

(المسند للإمام احمد بن حنبل، الحديث: ٢٣٥١٧، ج ٩، ص ١٢٠)

(4) कियामत में रुस्वाँ

तक़्बुर करने वालों को कियामत के दिन ज़िल्लतो रुस्वाँ का सामना होगा, युनान्हे दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर का इरमाने आलीशान है : “कियामत के दिन मु-तक़्बिरीन को ईन्सानी शक़लों में व्यूटियों की मानिन्द उठाया जायेगा, हर जानिब से उन पर ज़िल्लत तारी होगी, उन्हें जहन्नम के “बूल्स” नामी कैदघाने की तरफ़ हांका जायेगा और बहोत बड़ी आग उन्हें अपनी लपेट में ले कर उन पर गालिब आ जायेगी, उन्हें “ती-नतुल ખબाल या’नी जहन्नमियों की पीप” पिदाई जायेगी.”

(جامع الترمذی، کتاب صفة القيامة، باب ماجاء في شدة..... الخ، الحديث: ٢٥٠٠، ج ٤، ص ٢٢)

(5) टप्ने से नीये पाजामा लटकाना

रहमते ईलाही से महरूम होने वालों में मु-तक़्बिर भी शामिल होगा, जैसाके अल्लाह के महरूम, दानाये गुयूब, मुनज़्ज़लुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाई इरमाया : “जो तक़्बुर की वजह से अपना तलबन्द लटकायेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कियामत के दिन उस पर नज़रे रहमत न इरमायेगा.”

(صحيح البخارى، كتاب اللباس، باب من جرثوبه من الخيلاء، الحديث: ٥٧٨٨، ج ٤، ص ٤٦)

म-दनी कूल : आ’ला हज़रत, ईमामे अहले सुन्नत शाह ईमाम अहमद रज़ा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ इरमाते हैं : “पाईयों का का’बैन (या’नी दोनों टप्नों) से नीया होना जिसे अ-रबी में “ईस्बाल” कहते हैं अगर बराहे उजुब व तक़्बुर (या’नी षुद पसन्दी और तक़्बुर की वजह से) है तो कत्बन

मन्मूअ व हराम है और उस पर वरिद शदीद वारिद, और अगर ब वजहे तक़्बुर नहीं तो ब हुकमे ज़ाहिर अहादीस मर्दों को भी ज़ाहिर है. मगर उ-लमा दर सूरते अ-दमे तक़्बुर (या'नी तक़्बुर के तौर पर न होने की सूरत में) हुकमे कराहते तन्जीही देते हैं. बिल जुम्ला (या'नी फुलासा येह के) ईस्बाल अगर बराहे उजब व तक़्बुर है हराम, वरना मक़्दुह और ज़िहाफ़े औला.”

(ملخصاً از فتاویٰ رضویہ، ۲۲ ج، ۱۳۴، ۱۳۷)

(6) जन्नत में दाखिल न हो सकेगा

उजरते सय्यिहुना अब्दुल्लाह बिन मसूदिद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं के ताजदारे रिसालत, शह-शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्मे अजमे हिदायत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : “जिस के दिल में राई के दाने जितना (या'नी थोडा सा) भी तक़्बुर होगा वोह जन्नत में दाखिल न होगा.”

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب تحريم الكبر وبيانہ، الحديث: ۱۴۷، ص ۶۰)

उजरते अल्लामा मुल्ला अली कारी لَا يُخَيَّبُكَ اللهُ بِرَحْمَةِ اللهِ الْبَارِئِ लिखते हैं : जन्नत में दाखिल न होने से मुराद येह है के तक़्बुर के साथ कोई जन्नत में दाखिल न होगा बल्के तक़्बुर और हर बुरी ખस्लत से अजाब त्मुगतने के जरीअे या अल्लाह तआला के अइवो करम से पाक व साफ़ हो कर जन्नत में दाखिल होगा.

(مرقاة المفاتيح، كتاب الآداب، باب الغضب والكبر، ج ۸، ص ۸۲۸، ۸۲۹)

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْرُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

ईस तक़्बुर का क्या हासिल !

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! जरा सोचिये के ईस तक़्बुर का क्या हासिल ! महुज़ लज़्ज़ते नफ़स, वोह भी यन्द लम्हों के लिये ! ज़बके ईस के नतीजे में अल्लाह व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नाराज़ी, मख़्लूक की बेजारी, मैदाने मइशर में ज़िल्लतो रुस्वाइ,

रब ٱلْعَزِيز की रहमत और ईन्आमाते जन्त से मइरूमी और जहन्नम का रिहाईशी बनने जैसे बडे बडे नुक्सानात का सामना है ! अब कैसेला हमारे हाथ में है के यन्द लम्हों की लज़्जत याहिये या हमेशा के लिये जन्त ! मैदाने मइशर में ईज़्जत याहिये या ज़िल्लत ! यकीनन हम जसारे (या'नी नुक्सान) में नहीं रहना याहेंगे तो हमें याहिये के अपने अन्दर ईस म-रजे तक़्बुर की मौजूदगी का पता यलाअें और ईस के ईलाज के लिये कोशां हो जाअें. हर बातिनी मरज़ की कुछ न कुछ अलामात होती हैं, आईये ! सब से पहले हम तक़्बुर की अलामात के बारे में जानते हैं फिर सन्जुदगी से अपना मुहा-सबा करने की कोशिश करते हैं. याद रहे ! तक़्बुर की मा'लूमात हासिल करने का मक्सद अपनी ईस्लाह हो न के दीगर मुसल्मानों के उयूब जानने की ज़ुस्त-जू, ज़बरदार ! अपनी नाकिस मा'लूमात की बिना पर किसी भी मुसल्मान पर ज्वाह म ज्वाह मु-तक़्बिर होने का हुक्म न लगाईये, आ'ला उज़रत ईमाम अहमद रज़ा ज़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ईरमाते हैं : लाजों मसाईल व अहकाम, निय्यत के ईर्क से तब्दील हो जाते हैं. (فتاوىٰ رضويه، ج ۸، ص ۹۸)

येह बात भी जेह्न में रहे के ईन अलामात को मइज़ अेक मर्तबा पढना और सरसरी तौर पर अपना जाअेजा ले लेना ही काई नहीं क्यूंके नईसो शैतान कभी नहीं याहेंगे के हम ईन अलामात को अपने अन्दर तलाश कर के तक़्बुर का ईलाज करने में काम्याब हो जाअें, लिहाजा अलामाते तक़्बुर को बार बार पढ कर खूब अख़ी तरह जेह्न नशीन कर लीजिये फिर अपना मुसल्सल मुहा-सबा जारी रफिये तो काम्याबी की राह हमवार हो जाअेगी, اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيبِ!

“तकब्बुर जहन्नम में ले जाओगा” के 19 डुइक की निस्बत से तकब्बुर की 19 अलामत

पहली अलामत : इस बात को पसन्द करना के लोग मुझे देख कर ता'जीमन अडे हो जाअें ताके दूसरों पर मेरी शानो शौकत का ठजहार हो.

(الحديقة الندية، ج ١، ص ٥٨٣)

मुडा-सबा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

म-दनी कूल : अगर कोई लोगों के अडे होने को इस लिये पसन्द करता है के कम इल्म (जाहिल) लोगों को उस की हैसियत का इल्म हो जाअे और वोड दीन के मुआ-मले में उस की नसीहत को कबूल करें, तकब्बुर का नामो निशान भी दिल में न हो तो ऐसा शप्स मु-तकब्बिर नहीं है क्यूंके आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है, हर आदमी के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की और निय्यतों का हाल अल्लाह ۞ जानता है. मगर येड बडोत मुश्किल काम है लिडाजा ! जैसे शप्स को अपने दिल पर अेक सो बारड बार गौर कर लेना याहिये के ऐसा न हो के नइसो शैतान उसे धोके में मुत्तला कर के उलाकत के जंगल में पड़ोया दें.

(الحديقة الندية، ج ١، ص ٥٨٣)

दूसरी अलामत : येड याहना के इस्लामी भाई मेरी ता'जीम की आतिर मेरे सामने आ अदब अडे रहें ताके लोगों में मेरा मकाम व मर्तबा आहिर हो.

(أيضاً)

मुडा-सबा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले

सय्यिदुल मुर-सलीन, आ-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रइमतुदिलिल आ-लमीन ۞ का इरमाने इअ्रत निशान है : “जिस की येड ખुशी हो के लोग मेरी ता'जीम के लिये अडे रहें, वोड अपना ठिकाना जहन्नम में बनाअे.”

(جامع الترمذي، كتاب الادب، الحديث: ٢٧٦٤، ج ٤، ص ٣٤٧)

अ-जमिय्यों की तरह षडे न रहा करो

हजरते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के साहिबे कुरआने मुबीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिको अभीन وَعَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर टेक लगा कर बाहर तशरीफ़ लाये. हम आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये षडे हो गये. ईशाद फ़रमाया : “ईस तरह न षडे हुवा करो जैसे अ-जमी षडे हुवा करते हैं के उन के बा'ज, बा'ज की ता'जीम करते हैं.”

(سنن أبي داود، كتاب الادب، الحديث ٥٢٣٠، ج ٤، ص ٤٥٨)

बयान कर्दा हदीस की तशरीह

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 312 स-इलात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 113 पर सदरुशशरीअह, बहरतरीकह हजरते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी हदीस के तह्त लिखते हैं : या'नी अ-जमिय्यों का षडे होने में जो तरीका है वोह कभीह व मजमूम (या'नी बुरा) है, ईस तरह षडे होने की मुमा-न-अत है, वोह येह है के उ-मरा बैठे हुअे होते हैं और कुछ लोग बर वजहे ता'जीम उन के करीब षडे रहते हैं. दूसरी सूरत अ-हमे जवाज की वोह है के वोह जुद पसन्द करता हो के मेरे लिये लोग षडे हुवा करें और कोई षडा न हो तो बुरा माने जैसाके हिन्दूस्तान में अब ली बहोत जगह रवाज है के अभीरों, रईसों, जमीनदारों के लिये उन की रिआया षडी होती है, न षडी हो तो जदो कोब तक नौबत आती है. जैसे ही मु-तकब्बिरीन व मु-तजब्बिरीन (या'नी तकब्बुर और जुल्म करने वालों) के मु-तअद्विक हदीस में वईद आई है और अगर उन की तरफ़ से येह न हो बल्के येह षडा होने वाला उस को मुस्तहिके ता'जीम समज कर सवाब के लिये षडा होता है या तवाजोअ के

તૌર પર કિસી કે લિયે ખડા હોતા હૈ તો યેહ ના જાઈઝ નહીં બલકે મુસ્તહબ હૈ. (બેહારશરીયત, હુમ્દ ૧૬, વ ૧૧૩)

અપને સરદાર કે પાસ ઉઠ કર જાઓ

હઝરતે સય્યિદુના અબૂ સઈદ ખુદરી رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ سے મરવી હૈ કે જબ બની કુરૈઝા અપને કલ્બે સે હઝરતે સય્યિદુના સા'દ બિન મુઆઝ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે હુકમ પર ઉતરે, હુઝૂરે અન્વર મુઆઝ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને હઝરતે સય્યિદુના સા'દ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે પાસ આદમી ભેજા ઔર વોહ વહાં સે કરીબ મેં થે. જબ મસ્જિદ કે કરીબ આ ગએ, આપ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને અન્સાર સે ફરમાયા : “અપને સરદાર કે પાસ ઉઠ કર જાઓ.”

(صحيح البخاري، كتاب الجهاد، باب اذا نزل العدو..... الخ، الحديث ૩૦૪૩، ج ૨، ص ૩૨૨)

સહાબએ કિરામ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ ખડે હો કર તા'ઝીમ કિયા કરતે

હઝરતે સય્યિદુના અબૂ હુરૈરા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હૈં કે મીઠે મીઠે આકા મક્કી મ-દની મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ મસ્જિદ મેં બૈઠ કર હમ સે બાતેં કરતે જબ આપ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ખડે હોતે તો હમ ભી ખડે હો જાતે ઔર ઉતની દેર ખડે રહતે કે હુઝૂર મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કો દેખ લેતે કે બા'ઝ અઝવાજે મુતહ્હરાત રહતે કે મકાન મેં તશરીફ લે ગએ.

(شعب الإيمان، باب في مقارنة..... الخ، الحديث ૮૯૩૦، ج ૬، ص ૬૭૬)

તીસરી અલામત : કહીં આતે જાતે વક્ત યેહ ખ્વાહિશ રખના કે મેરા કોઈ શાગિર્દ યા મુરીદ યા અકીદત મન્દ યા કોઈ રફીક બરાબર યા પીછે પીછે ચલે તાકે લોગ મુઝે મુઅઝ્ઝઝ સમઝેં.

(الحديقة الندية، ج ૧، ص ૫૮૬)

મુહા-સબા : કહીં હમ ભી તો ઐસે નહીં ?

दूरी में ँजाफ़ा ढोता रहता

ढउरते सख़िदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફरमाते हैं :

“जब तक किसी आदमी के पीछे चलने वाले ढों अल्लाह तआला से उस की दूरी में ँजाफ़ा ढोता रहता है.”

(احياء علوم الدين، كتاب ذم الكبر والعجب، ج ۳، ص ۴۴)

म-दनी इल : कभी ँन्सान की आदत में येह शामिल ढोता है के चलने में उस के साथ कोई न कोई ङरर ढो ँस लिये के तन्हा जाने में उसे वडशत ढोती है या अकेले जाने में दुश्मन का ढौंफ़ है के वोह अजियत व नुकसान पढोंयाअेगा तो अैसी सूरत में किसी को साथ ले लेना तक़्बुर में ढाभिल नहीं.

(الحديقة الندية، ج ۱، ص ۵۸۴)

यौथी अलामत : किसी से मुलाकात के लिये ढुढ चल कर जाने में जिल्लत समजना, ँस ढात को पसन्द करना के दूसरा मुज से मिलने आअे.

(أيضاً)

मुढा-सढा : कहीं ढम ढी तो अैसे नहीं ?

म-दनी इल : अगर कोई अपनी ढीनी या दुन्यावी मसरूफ़ियात के सबढ ढोगों से मुलाकात करने नहीं जाता या ँस लिये नहीं मिलता के गीढत वगैरा गुनाढों में मुढतला ढोने का अन्देशा है या सामने वाले पर उस की मुलाकात गिरां गुजरेगी तो अैसा करना तक़्बुर नहीं और ँन वुजूढात की ढिना पर मुलाकात न करना मजमूम (या'नी काढिले मजम्मत) ढी नहीं है.

(أيضاً)

पांयवीं अलामत : ढ जाहिर किसी कमतर ँस्लामी ढाई का ढराढर आ कर ढैठ जाना ँस लिये ना गवार गुजरना के मैं ँस से अइजल हूं, येह ढी तक़्बुर में ढाभिल है.

(الحديقة الندية، ج ۱، ص ۵۸۵)

मुढा-सढा : कहीं ढम ढी तो अैसे नहीं ?

जब हजाम बराबर आ कर बैठे.....

पलीक़मे आ'ला हजरत मौलाना सय्यिद अय्यूब अली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعُودِي का बयान है के अेक साहिब जिन का नाम मुजे याद नहीं आ'ला हजरत, एमामे अहले सुन्नत, मुजद्विदे दीनो मिल्लत, हजरते अल्लामा मौलाना शाह एमाम अहमद रज़ा ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ખिदमत में लाज़िर हुवा करते थे और आ'ला हजरत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزْمَةِ ली क़मी क़मी उन के यहां तशरीफ़ ले ज़ाया करते थे. अेक भरतबा हुज़ूर (आ'ला हजरत) उन के यहां तशरीफ़ इरमा थे के उन के महल्ले का अेक बेयारा गरीब मुसल्मान टूटी हुई पुरानी यारपाई पर ज़ो सेह्न के कनारे पडी थी जिजकते हुअे बैठा डी था के साहिबे खाना ने निहायत कडवे तेवरों से उस की तरफ़ देखना शुइअ किया यहां तक के वोह नदामत से सर जुकाअे उठ कर यला गया. आ'ला हजरत عَلَيْهِ रَحْمَةُ رَبِّ الْعَزْمَةِ को साहिबे खाना की इस भगइराना रविश पर सप्त तकलीफ़ पड़ोथी मगर कुए इरमाया नहीं. कुए दिनो भा'द वोह आप के यहां आअे. आ'ला हजरत عَلَيْهِ रَحْمَةُ رَبِّ الْعَزْمَةِ ने अपनी यारपाई पर जगड दी, वोह बैठे डी थे के एतने में करीम बख़्श हजाम हुज़ूर (आ'ला हजरत) का पत बनाने के लिये आअे, वोह इस इक में थे के कहां बैठूं ? आ'ला हजरत عَلَيْهِ रَحْمَةُ رَبِّ الْعَزْمَةِ ने इरमाया : “भाई करीम बख़्श ! क्यूं पडे डो ? मुसल्मान आपस में भाई भाई हैं.” और उन साहिब के बराबर में बैठने का एशारा इरमाया, वोह बैठ गअे, इर उन साहिब के गुस्से की येह कैइय्यत थी के जैसे सांप कुन्कारें मारता है, वोह इरन उठ कर यले गअे, इर क़मी न आअे. खिलाइे मा'मूल जब अर्सा गुजर गया तो आ'ला हजरत عَلَيْهِ रَحْمَةُ رَبِّ الْعَزْمَةِ ने इरमाया : अब कुलां साहिब तशरीफ़ नहीं लाते हैं ! इर खुद डी इरमाया : मैं ली अैसे शप्स से मिलना नहीं याइता. (इयाते आ'ला हजरत, इरिस्सा : 1, स. 108)

देहातियों को नीचे न बैठने दिया

मुहम्मद से आ'जमे पाकिस्तान उठरते अल्लामा मौलाना मुहम्मद सरदार अहमद कादिरि عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ की जिदमत में दो देहाती अेक मस्जिद पूछने के लिये लाजिर हुअे. आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ उस वक्त यारपाई पर जल्वा गर थे, देहातियों ने आप के इल्मी मकाम का पास करते हुअे जमीन पर बैठना याहा मगर आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ ने आजिजी करते हुअे उन देहातियों को इसरार कर के न सिर्फ़ यारपाई पर बैठाया बल्के अपनी यारपाई के सिरहाने की तरफ़ बिठाया. हुक़म की ता'मील के लिये उन्हें आप के बराबर बैठना पडा और आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ ने उन के मस्जिद का जवाब मईमत इरमाया.

(حیاتِ محدّثِ اعظم، ص ۱۹۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रइमत हो और उन के सदके हमारी मग़ि़रत हो.

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

छटी अलामत : मरीजों, मा'जूरों और गरीबों को उकीर जानते हुअे उन के पास बैठने से इजितनाब करना.

(الحديقة الندية، ج ۱، ص ۵۸۵)

मुहा-सभा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

सातवीं अलामत : किसी को उकीर जानते हुअे सलाम में पहल न करना बल्के दूसरे इस्लामी भाई से तवक्कोअ रभना के येह मुझे सलाम करे.

(احياء علوم الدين، ج ۳، ص ۴۲۷ ملخصاً)

मुहा-सभा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

आठवीं अलामत : अपने मा तइत या किसी और इस्लामी भाई को उकीर जान कर उस से मुसा-इहा करने को ना पसन्द करना, अगर हाथ मिलाना ही पड जाअे तो तभीअत पर गिरां (या'नी ना गवार) गुजरना.

मुडा-सभा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

नवीं अलामत : किसी मुअज़्ज़मे दीनी की ता'ज़ीम के लिये षडा होने को गवारा न करना.

मुडा-सभा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

दसवीं अलामत : अपने लिबास, उठने बैठने और गुफ्त-गू में धम्नियाज़ याहना ताके दूसरों को नीया दिभा सके.

मुडा-सभा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

ग्यारहवीं अलामत : अपना कुसूर छोते हुअे भी ग-लती तस्वीम न करना और मुआफ़ी मांगने के लिये तय्यार न होना.

(الحديقة الندية، ج ١، ص ٥٨٨ ملخصاً)

मुडा-सभा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

बारहवीं अलामत : किसी की नसीहत या भश्वरा कबूल करने में ज़िल्लत महसूस करना.

(احياء علوم الدين، ج ٣، ص ٤٢٢)

मुडा-सभा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

तेरहवीं अलामत : अगर किसी को नसीहत की या कोई भश्वरा दिया और उस ने किसी मा'कूल वजह से कबूल न किया तो आपे से बाहर हो ज़ाना.

(احياء علوم الدين، ج ٣، ص ٤٢٢)

मुडा-सभा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

बौदहवीं अलामत : हर अक से बहस कर के गालिब आने की कोशिश करना, दूसरे की दुरुस्त बात को गलत और अपनी गलत बात को भी सभ से बेहतर तसव्वुर करना.

(الحديقة الندية، ج ١، ص ٥٨٨)

मुडा-सभा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

पन्डरहवीं अलामत : किसी को हकीर जान कर उस के हुकूम अदा न करना और अगर उस से हक की अदाई का मुता-लबा किया जाये तो उसे तस्लीम न करना. (جامع العلوم والحكم، ص ۴۱۷ ملخصاً)

मुहा-सबा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

सोलहवीं अलामत : हर वक्त दूसरों के मुकाबले में अपनी भरतरी के पहलू तलाश करते रहना. (احياء علوم الدين، ج ۳، ص ۴۳۰ ملخصاً)

मुहा-सबा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

सत्तरहवीं अलामत : अपने घर के काम काज करने, बाजार से सौदा सुलई उठा कर लाने को करे शान समझना. (الحديقة الندية، ج ۱، ص ۵۸۶)

मुहा-सबा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

म-दनी झूल : अगर मरज, तकलीफ़, सुस्ती या बुढ़ापे की वजह से घर के काम काज में हाथ नहीं बटाता तो जैसे शप्स पर कोई ठेकाम नहीं.

(الحديقة الندية، ج ۱، ص ۵۸۶)

अठारहवीं अलामत : कम कीमत लिबास पहनने में शर्म महसूस करना के लोग क्या कहेंगे ! (ايضاً)

मुहा-सबा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

उन्नीसवीं अलामत : अमीरों की दा'वत में पूरे अहतिमाम से शरीक होना और गरीबों की दा'वत को सिरे से कबूल ही न करना. (ايضاً)

मुहा-सबा : कहीं हम भी तो जैसे नहीं ?

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अनोभी छींक

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ "कैजाने सुन्नत" जिल्द 2 के 499 स-इलात पर मुश्तमिल बाब, "गीबत की तबाह कारियां" सफ़हा 325 पर है : नमाजों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, आप की तरगीब व तहरीस के लिये अेक म-दनी बहार पेशे बिदमत है युनान्हे अेक ईस्लामी भाई का कुछ ईस तरह का बयान है के मेरी रीढ की डडी का मोहरा अपनी जगह से ढिल गया था. बडोत ईलाज कराया मगर ईझाका न हुवा. अेक ईस्लामी भाई के तरगीब दिलाने पर आशिकाने रसूल के साथ दा'वते ईस्लामी के सुन्नतों के तरबियत के म-दनी काफ़िले में सफ़र किया. रात के जाने के वक्त अयानक मुजे जोरदार छींक आई जिस से मेरा सारा जिस्म लरज उठा. صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ उस अनोभी छींक की ब-र-कत से मेरी रीढ की डडी का मोहरा अपनी जगह पर दुरुस्त हो गया.

रीढ की डडियों, की ली लीमारियों, से मिलेगी शिफ़ा, काफ़िले में यलो

ताजदारेहरम, का जोडोगा करम या अेगा दिल जिला, काफ़िले में यलो

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

छींक की ब-र-कतें

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! म-दनी काफ़िले की ली क्या भूब बहारें हैं ! के ईस की ब-र-कत से जोरदार छींक आई और पीठ का मोहरा दुरुस्त हो गया ! छींक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को पसन्द है और ईस की ली क्या भूब ब-र-कतें हैं ! दा'वते ईस्लामी

के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना के मत्बूआ 32 स-इंछात पर मुशतमिल रिसाले, “101 म-दनी इूल” सइंछा 13 ता 14 पर है : (1) जो कोई छींक आने पर **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ** कहे और अपनी ज़बान सारे दांतों पर डेर लिया करे तो **اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** दांतों की बीमारियों से मलइकूज़ रहेगा. (**مرآة المناجیح ج ٦ ص ٣٩٦**) (2) उअरते मौलाअे काअेनात, **अलिय्युल मुर्तज़ा** **مَرْمُومٌ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْمُ** हें : जो कोई छींक आने पर **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** कहे तो वोह दाढ और कान के दद में कभी मुअ्तला नईां छोगा. (**مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيْحِ ج ٨ ص ٤٩٩ تحت الحديث ٤٧٣٩**) (3) छींक आने पर **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ** या याहिये बेउतर येह है के **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ** कहे. (4) सुनने वाले पर वाजिअ है के इौरन “ **يَرْحَمُكَ اللّٰهُ** ” (या’नी अल्लाह तुअ पर रइम इरमाअे) कहे. और ईतनी आवाज से कहे के छींकने वाला खुद सुन ले. (**بہارِ شریعت حصّہ ١٦ ص ١١٩**) (5) जवाअ सुन कर छींकने वाला कहे : “ **يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَ لَكُمْ** ” (या’नी अल्लाह उमारी और तुअारी मग्दिरत इरमाअे) या येह कहे : “ **يَهْدِيْكُمْ اللّٰهُ وَيُصْلِحْ بَاكُمْ** ” (या’नी अल्लाह तुअें छिदायत दे और तुअारा डाल दुरुस्त करे).

(**عالمگیری ج ٥ ص ٣٢٦**) (**غیبت کی تباہ کاریاں ص ٣٢٥**)

صَلُّوْا عَلٰى الْخَبِيْبِ اِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तक़्क़ुबुर के मुअ्तलिइ अ-दाल

तक़्क़ुबुर का ईजडार कभी तो ईन्सान की उ-रकात व स-कनात से डोता है जैसे मुंड इलाना, नाक यढाना, माथे पर अल डालना, धूरना, सर को अेक तरइ लुकाना, टांग पर टांग रअ कर बैठना, टेक लगा कर पाना, अकड कर यलना वगैरा और कभी गुइत-गू से म-सलन येह कडना : “ **केयवे की औलाद ! तुम मेरे**

सामने जमान यलाते हो, तुम्हारी येह हिम्मत के मुझे जवाब देते हो" वगैरा वगैरा. अल गरज मुप्तलिफ अहवाल, अक्वाल और अफ्वाल के जरीअे तकब्बुर का ईजहार हो सकता है, फिर बा'ज मु-तकब्बिरीन में ईजहार के तमाम अन्दाज पाअे जाते हैं और कुछ मु-तकब्बिरीन में बा'ज. लेकिन याद रहे के येह तमाम बातें उसी वक्त तकब्बुर के जुमरे में आअेंगी जबके दिल में तकब्बुर मौजूद हो मद्दज ईन चीजों को तकब्बुर नहीं कहा जा सकता.

(ماخوز از احیاء العلوم، ج ۳، ص ۴۳۴)

तकब्बुर के नतीजे में पैदा होने वाली बुराईयां

तकब्बुर अैसा मोडलिक मरज है के अपने साथ दीगर कई बुराईयों को लाता है और कई अख्शाईयों से आदमी को मलइम कर देता है. युनान्थे हुज्जतुल ईस्लाम हजरते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ लिखते हैं : "मु-तकब्बिर शप्स जो कुछ अपने लिये पसन्द करता है अपने मुसल्मान भाई के लिये पसन्द नहीं कर सकता, अैसा शप्स आजिजी पर ली कादिर नहीं होता जो तक्वा व परहेज गारी की जड है, कीना ली नहीं छोड सकता, अपनी ईज्जत बयाने के लिये जूट बोलता है, ईस जूटी ईज्जत की वजह से गुस्सा नहीं छोड सकता, हसद से नहीं बय सकता, किसी की पैर प्वाही नहीं कर सकता, दूसरों की नसीहत कबूल करने से मलइम रहता है, लोगों की गीबत में मुप्तला हो जाता है अल गरज मु-तकब्बिर आदमी अपना लरम रपने के लिये हर बुराई करने पर मजबूर और हर अख्शे काम को करने से आजिज हो जाता है."

(احیاء العلوم، ج ۳، ص ۴۲۳ ملخصاً)

तकब्बुर से जान छुडा लीजिये

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! ईस गुनाह की ता'रीफ, तबाह कारियां, बा'ज अलामतें जानने और मुसल्सल गौरो फ़िक के बा'द अपने अन्दर तकब्बुर की मौजूदगी का ईन्किशाफ़ होने की सूरत में

झोरी तौर पर ईलाज की कोशिशें करना हम पर लाज़िम है. यकीनन नईसो शैतान अपना सारा जोर लगायेंगे के “हम सुधरने न पायें”, लेकिन सोचिये तो सही के आभिर हम कब तक नईसो शैतान के सामने यारों शाने बित होते रहेंगे ! कब तक हम ज्वाबे भरगोश के मजे लेते रहेंगे ! कब्र में भीठी नींद सोने के लिये हमें आज ही बेदार होना पड़ेगा. आ’ला हज़रत عليه ربه الرحمة मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की बारगाछे बेकस पनाह में नईसो शैतान के ज़िलाफ़ यूँ फ़रियाह करते हैं,

صلى الله تعالى عليه وآله وسلم
**सरवरे दी लीजे अपने ना तुवानों की ज़बर
 नईसो शैतां सय्यिदा कब तक दबाते ज़ायेंगे**

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! गुनाहों के ईलाज में हमारी ज़रा सी ग़ज़लत तवील परेशानी का सबज बन सकती है के न जाने कब मौत हमें दुन्या की रौनकों से उठा कर वीरान कब्र की तन्हाईयों में पछोंया दे, जहां न सिर्फ़ धुप अंधेरा बढके वलशत का बसेरा भी होगा, कोई मूनिस न कोई हमदहद ! अगर तकब्बुर और दीगर गुनाहों के सबज हमें अजाबे कब्र में मुज्तला कर दिया गया, आग लडका दी गई, सांप और बिख़रू हम से लिपट गये, हमें मारा पीटा गया तो क्या करेंगे ! किस से फ़रियाह करेंगे ! कौन हमें छुडाने आयेगा ! आज मौक़अ है के तकब्बुर समेत अपने तमाम गुनाहों से सय्यी तौबा कर के अपने रब عَزَّوَجَلَّ को मना लीजिये.

عَزَّوَجَلَّ
 कर ले तौबा रब की रहमत है बडी

कब्र में वरना सजा होगी कडी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“**ईलाजे तकब्बुर**” के आठ छुड़के की निस्बत से तकब्बुर पर उभारने वाले 8 अस्बाब और उन का ईलाज

हर मरज के ईलाज के लिये उस के अस्बाब का ज्ञानना बहोत जरूरी है, बुन्यादी तौर पर हिल में तकब्बुर उसी वक्त पैदा होता है जब आदमी जुद को बडा समझे और अपने आप को वोही बडा समजता है जो अपने अन्दर किसी कमाल की भू पाता है, फिर वोह कमाल या तो दीनी होता है जैसे ईल्म व अमल वगैरा और कभी दुन्यवी म-सलन मालो दौलत और ताकत व मन्सब वगैरा, यूं तकब्बुर के कम अज कम 8 अस्बाब हैं : (1) ईल्म (2) ईबादत (3) मालो दौलत (4) हसब व नसब (5) ओहदा व मन्सब (6) काम्याबियां (7) हुस्नो जमाल (8) ताकत व कुव्वत.

(احياء علوم الدين، ج ۳، ص ۴۲۶ تا ۴۳۳ ملخصاً)

(1) ईल्म

ईल्मे दीन सीपना सिपाना बहोत बडी सआदत है और अपनी जरूरत के ब कदर ईस का हासिल करना इर्ज भी है मगर बा'ज अवकात ईन्सान कसरते ईल्म की वजह से भी तकब्बुर की आइत में मुब्तला हो जाता है और कम ईल्म ईस्लामी भाईयों को हकीर ज्ञानने लगता है. बात बात पर उन्हें आडना, वोह कोई सुवाल पूछ बैठें तो उन की कम ईल्मी का अेहसास हिला कर जलील करना, उन्हें “जाहिल” और “गंवार” जैसे बुरे अडकाभात से याद करना उस की आदत बन जाता है. औसा शप्स तवक्कोअ रખता है के लोग उसे सलाम में पहल करें और अगर येह किसी अनपढ को सलाम में पहल कर ले या दो घडी उस से मुलाकात कर ले या उस की दा'वत कबूल कर ले तो उस पर अपना अेहसान समजता है, आम तौर पर लोग उस की भैर ज्वाही करते हैं मगर येह उन के साथ

हुस्ने सुलूक नहीं करता, लोग उस की मुलाकात को आते हैं लेकिन येह जुद यल कर उन से मुलाकात को नहीं जाता, लोग उस की बीमार पुर्सी करते हैं मगर येह उन की बीमार पुर्सी नहीं करता, कोई उस की खिदमत में कोताही करे तो उसे बुरा जानता है, वोह जुद को अद्लाह तआला के हां दूसरे लोगों से अइजल व आ'ला समजता है, उन के गुनाहों को बुरा जानता अपनी ખताओं तूल जाता है. अल गरज अैसा शप्स सर से पाउं तक आइते एल्म या'नी तक़्बुर में गरिइतार हो जाता है, युनान्ये मरवी है के : “اَقْبَةُ الْعِلْمِ الْخَيْلَاءُ” या'नी एल्म की आइत तक़्बुर है.”

(فيض القدير، تحت الحديث: ٩٦٥٤ ج ٦ ص ٤٧٨)

एल्म से पैदा होने वाले तक़्बुर के एलाज

(1) अैसे एस्लामी त्माईयों को “मुअद्लिमुल म-लकूत”के मन्सब तक पहोंचने वाले (या'नी शैतान) का अन्जाम याद रખना याहिये जिस ने अपने आप को उजरते सय्यिदुना आदम सइय्युल्लाह के नतीजे में क्या मिला ! उरना याहिये के कहीं येह तक़्बुर उमें भी अजाबे जहन्नम का उकदार न बना दे.

गर तू नाराज हुवा मेरी उलाकत होगी

हाअे में नारे जहन्नम में जलूंगा या रब ^{عَزَّوَجَلَّ}

(2) एस रिवायत को गौर से पढिये और अपना मुहा-सबा कीजिये के आप कहां पडे हैं !

अउले एल्म के तक़्बुर में मुत्तला होने का सभब

उजरते सय्यिदुना वइब बिन मुनउबेह ^{رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ} एर्शाद इरमाते हैं : “एल्म की मिसाल तो बारिश के उस पानी की तरह है जो आस्मान से साइ व शइइइ और मीठा नाजिल होता है और

दरप्ट उस को अपनी शाओं के जरीअे जज़्ब कर लेते हैं. अब अगर दरप्ट कडवा होता है तो बारिश का पानी उस की कडवाहट में धँसा करता है और अगर वोह दरप्ट मीठा होता है तो उस की मिठास में धँसा करता है बस यूँही **ईल्म** बजाते **पुद** तो **फ़ाअेदे** का बाईस है मगर जब **पवाहिश**ाते **नफ़्स** में गरिफ़्तार **ईन्सान** **ईस** को **हासिल** करता है तो येह **ईल्म** उस के **तक़्बुर** में **मुत्तला** होने का सबब बन जाता है और जब **शरीफ़्न्नफ़्स** **ईन्सान** को येह **दौलते** **ईल्म** **हासिल** होती है तो येह उस की **शराफ़्त**, **ईबादत**, **फौज़** व **अशिय्यत** और **परहेज़ गारी** में धँसा करता है.”

(الحديقة الندية، ج ١، ص ٥٥٧)

आलिम का पुद को “आलिम” समजना

(3) पुद को “आलिम” बल्के “अल्लामा” कहने बल्के **दिल** में **समजने** वालों के **लिये** **बी मकामे गौर** है के **आ’ला** **हज़रत शाह** **ईमाम अहमद रज़ा पान** **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** **जिन्हें** **55** से **ज़ाईद** **उलूम** व **कुनून** पर **उबूर** **हासिल** था, **आप** **رَحْمَةُ اللهِ تَكُنْ عَلَيْهِ** **की** **ईल्मी** **वजाहत**, **फ़िक़्ही** **महारत** और **तहक़ीकी** **बसीरत** के **जल्वे** **देखने** **हों** तो **इतावा** **र-जविय्या** **देख** **लीजिये** **जिस** **की** **30** **जिल्दें** (**तफ़्रीज शुदा**) हैं. **अेक** **ही** **मुफ़्ती** के **कलम** से **निकला** **हुवा** **येह** **गालिबन** **उर्दू** **जबान** में **दुन्या** का **जफ़ीम** **तरीन** **मजमूअे** **इतावा** है **जो** के **तक़रीबन** **बाईस** **हज़ार** (**22000**) **स-इहात**, **ए** **हज़ार** **आठ** **सो** **सेंतालीस** (**6847**) **सुवालात** के **जवाबात** और **दो** **सो** **ए** (**206**) **रसाईल** पर **मुशतमिल** है. **जबके** **हज़ारहा** **मसाईल** **जिम्नन** **जेरे** **बहस** **आगे** हैं. **औसे** **अज़ीमुश्शान** **आलिमे** **दीन** **अपने** **बारे** में **आजिजी** **करते** **हुअे** **इरमा** **रहे** हैं के **“इकीर** **तो** **अेक** **नाकिस**, **कासिर**, **अदना** **तालिबे** **ईल्म** है, **कभी** **पवाब** में **बी** **अपने** **लिये** **कोई** **मर्तबअे** **ईल्म** **काईम** **न** **किया** **और** **بَعْدَ ذَلِكَ** **अजिब** **अस्बाब** **येही** **अेक** **वजह** है के **रहमते** **ईलाही** **मेरी** **दस्त** **गीरी** **इरमाती** है, **मैं** **अपनी** **बे** **बजाअती**

(या'नी बे सरो सामानी) जानता हूँ, इस लिये झूँक झूँक कर कदम रभता हूँ, मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने करम से मेरी मदद फ़रमाते हैं और मुज पर एल्मे उक का एफ़ाजा फ़रमाते (या'नी झैज पछोंयाते) हैं, और उन्हीं के रब्बे करीम के लिये उम्ह है, और उन पर अ-बदी सलातो सलाम. (इतावा र-जविय्या, जि. 29, स. 594) अेक और मकाम पर फ़रमाते हैं: कभी मेरे दिल में ये उषतरा न गुजरा के मैं “आलिम” हूँ.”

(المعجم الاوسط، الحديث ٦٨٤٦، ج ٥، ص ١٣٩)

मकामे गौर है के जब एतने बडे मुफ़्ती, मुहदिस, मुफ़स्सिर और इकील फ़ुद को “आलिम” नहीं समजते तो मा व शुमा किस शुमार में हैं !

फ़ुद को आलिम कहने वाला ज़ाहिल है

उदीसे पाक में तो यहाँ तक आया के “يا'नी जिस शप्स ने ये उकडा के मैं आलिम हूँ, तो ऐसा शप्स ज़ाहिल है.”

(المعجم الاوسط، الحديث ٦٨٤٦، ج ٥، ص ١٣٩)

शारिहीन ने इस उदीसे मुबा-रका में अपने आप को “आलिम” कहने वाले को ज़ाहिल से ता'बीर करने की वजह ये उक बयान की के जो वाकेई आलिम होता है वो उ इस एल्म के जरीअे अपने नफ़स की मा'रिफ़त रभता है उसे अपना नफ़स एन्तिहाई उकीर व आजिज नजर आता है, इस लिये अपने लिये “एल्म का दा'वा” नहीं करता और वो उ ये उ समजता है के उकीकी एल्म तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के पास है जैसाके एशदि बारी तआला है :

“وَاللّٰهُ يَعْزَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝” (पारः : 2, अल ब-करः : 216) तर-ज-मअे कन्जुल एमान : और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते.” और जो आलिम होने का दा'वा करे तो गोया उस ने अत्मी एल्म को समजा ही नहीं है लिहाजा उसे ज़ाहिल कहा गया.

(الحديقة الندية، ج ١، ص ٥٦٧ ملخصاً)

म-दनी इल : आलिम अगर अपना “आलिम” होना लोगों पर जाहिर

करे तो ईस में हरज नहीं मगर येह ज़रूरी है के तफ़ापुर (इफ़्र जताने) के तौर पर येह ईजहार न हो के तफ़ापुर हराम है बल्के मद्ज़त तहदीसे ने'मते ईलाही के लिये येह जाहिर हुवा और येह मक़सद हो के जब लोगों को औसा मा'लूम होगा तो ईस्तिफ़ादा करेंगे कोई दीन की बात पूछेगा और कोई पढेगा.

(बेहार्शियेत, حصه 12, ص 20)

عَزَّوَجَلَّ (4) औसी रिवायात पेशे नजर रभे जिस में उ-लमा को अजाब दिये जाने का तजक़िरा है और फ़ुद को अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की बेनियाज़ी से उराओ, म-सलन :

सब से ज़ियादा अजाब

अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के मडबूब, दानाओ गुयूब, मुनज़्ज़लुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : “क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा अजाब उस आलिम को होगा जिस के ईल्म ने उसे नफ़्अ न दिया होगा.

(شعب الایمان، باب فی نشر العلم، الحدیث: 1778، ج 2، ص 285)

फ़ुद को डकीर समझने का तरीका

(5) जेवरे ईल्म से आरास्ता ईस्लामी भाई दूसरों को डकीर और फ़ुद को अफ़्जल समझने के शैतानी वार से बचने के लिये येह म-दनी सोय अपना ले के अगर अपने से कम उम्र को देखे तो उसे अपने से येह बयाल कर के अफ़्जल समझे के ईस की उम्र थोड़ी है, ईस के गुनाह भी मुज़ से कम होंगे, ईस लिये मुज़ से बेहतर है और अगर अपने से किसी बड़े को देखे तो उस को भी फ़ुद से बेहतर समझे और येह जाने के ईस की उम्र मुज़ से ज़ियादा है, ईस ने नेक़ियां भी मुज़ से ज़ियादा की होंगी, और अगर उम्र उम्र को देखे तो उस के बारे में हुस्ने ज़न रभे के येह ईताअत, ईबादत और नेकी में मुज़ से बेहतर है, अगर अपने से कम ईल्म या ज़ाहिल को देखे तो उस को भी अपने से बेहतर समझे के येह अपनी ज़ाहलत व कम ईल्मी की वजह से गुनाह करता है और मैं ईल्म रखने के बा वुजूद गुनाह में गरिफ़तार हूं ईस लिये येह ज़ाहिल तो मुज़ से

जियादा उज़र वाला है या'नी इस के पास तो एल्म के न होने की वजह से जहल का उज़र है मैं कौन सा उज़र पेश करूंगा ! और अगर जुद से जियादा एल्म वाले को देखे तो उस को भी जुद से बेहतर समझे और ये ज्ञाने के इस का एल्म जियादा है लिहाजा तकवा और एल्म की वजह से एबादात भी जियादा होंगी इस लिये के इसे मा'लूम है के किस किस एबादात का अजरो सवाब जियादा है ! कौन कौन से आ'माल का द-रजा बुलन्द है ! इस ने नेकियां भी अपने एल्म की वजह से जियादा जम्म कर ली होंगी और एल्म की इजीलत की वजह से जो बख्शिश व अता होगी वोह उस के नसीब में होगी, अगर किसी काफ़िर को देखे तो अगर्ये उसे हकीर जानने में शरअन कोई हरज नहीं मगर अपने दिल से तकब्बुर का सफ़ाया करने के लिये उसे भी ब हैसियते इन्सान के जुद से हकीर और कमतर न जाने, काफ़िर को देख कर अपने अन्दर इस तरह आज़िज़ी पैदा करे के इस वक्त येह काफ़िर है और मैं मोमिन, लेकिन क्या मा'लूम के येह तौबा कर ले और आबिरी वक्त में मुसल्मान हो जाये यूं इस का ખातिमा इमान पर हो जाये और येह बख्शिश व नज़ात का मुस्तलिक बन जाये जबके मैं सारी उम्र इमान पर गुज़ार कर मुम्किन है अपनी मौत से पहले कोई ऐसा काम कर बैहूँ के मेरा इमान जाता रहे और मेरा ખातिमा कुई पर हो ! हदीसे पाक में है : “ اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْمِ ”

या'नी आ'माल का दारो मदार ખातिमे पर है.” (صحیح البخاری الحدیث ۶۶۰۷، ج ۴، ص ۲۷۴) मुईसिसरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुईती अहमद यार ખान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस हदीसे पाक के तहत् फ़रमाते हैं : “या'नी मरते वक्त जैसा काम होगा वैसा ही अन्जाम होगा लिहाजा याहिये के बन्दा हर वक्त ही नेक काम करे के शायद वोही उस का आबिरी वक्त हो.” (مرآة المناجیح، ج ۱، ص ۹۵)

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! अल्लाह عزوجل ने बियाज है उस की “जुफ़या तदबीर” को कोई नहीं जानता, किसी को भी अपने एल्म या एबादात पर नाज़ नहीं करना याहिये. कहीं ऐसा न हो के

तक़्क़ुबुर की नुहूसत की वजह से मरने से पहले हमारा इमान सलब हो जाये और **عَلَىٰ نَفْسِهِ** हमारा जातिमा कुर्फ़ पर हो, अगर जुदा न प्वास्ता औसा हुवा तो इल्म के दफ़ीने और इबादतों के पजीने हमारे कुछ काम न आयेगे.

मुसल्मां हें अत्तार तेरी अता से

हो इमान पर जातिमा या इलाही

काफ़िर को काफ़िर कहना जरूरी है

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 686 स-इलात पर मुशतमिल किताब, "कुफ़्रिया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" के सफ़हा 59 पर शैखे तरीकत अमीरे अडले सुन्नत जानिये दा'वते इस्लामी हजरत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْإِنَّمَا** लिखते हें : काफ़िर को काफ़िर कहना न सिर्फ़ ज़ाज़ बल्के आ'ज़ सूरतों में इज़ है. सदरुशशरीअह, बदरुतरीकह हजरते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى** लिखते हें : अक येह वबा भी झैली हुई है कहते हें के "हम तो काफ़िर को भी काफ़िर न कहेंगे के हमें क्या मा'लूम के उस का जातिमा कुर्फ़ पर होगी" येह भी गलत है कुरआने अजीम ने काफ़िर को काफ़िर कहा और काफ़िर कहने का हुक्म दिया. (युनान्हे इशाद होता है :)

قُلْ يَا كُفْرًا وَن ۝

तर-ज-मअे क-जुल इमान : तुम
इरमाओ औ काफ़िरो !

(प ३०० الكافرون ۱)

और अगर औसा है तो मुसल्मान को भी मुसल्मान न कहो तुम्हें क्या मा'लूम के इस्लाम पर मरेगा जातिमे का डाल तो जुदा जाने मगर शरीअत ने काफ़िर व मुस्लिम में इम्तियाज़ रखा है.

(बेहार्शरीعت، جلد ۲، حصه ۹، ص ۲۵۵)

(9) अपने अकाबिरीन رحمة الله عليهم के नुक़्शे कदम से रहनुमाई हासिल कीजिये के एल्म व अमल के पहाड होने के बा वुजूद कैसी आजिजी किया करते थे !

“आजिजी का नूर” के 10 हुज़ूफ़ की निस्बत से बुज़ुग़ाने दीन की आजिजी की दस खिकायात (1) काश मैं परिन्दा होता

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक़ सिदीक رضي الله تعالى عنه ने ऐक परिन्दे को दरप्ट पर बैठे हुअे देखा तो फ़रमाया :
ऐ परिन्दे ! तू बडा पुश बप्ट है, वल्दाह ! काश ! मैं त्मी तेरी तरह होता, दरप्ट पर बैठता, फ़ल प्पाता, फ़िर उउ ज़ाता, तुज पर कोई खिसाब व अज़ाब नहीँ, प्पुदा की कसम ! काश ! मैं किसी रास्ते के कनारे पर कोई दरप्ट होता, वहां से किसी उिंट का गुज़र होता, वोह मुजे मुंड में डालता यबाता फ़िर निगल ज़ाता. ऐ काश ! मैं ईन्सान न होता. (مُصَنَّف ابن ابى شَيْبَةَ ج ٨ ص ١٤٤، دارالفكر بيروت)
पर फ़रमाया : “काश ! मैं किसी मुसल्मान के पडलू का बाल होता.”

(الزُّهْد، للإمام احمد بن حنبل ص ١٣٨ رقم ٥٦٠)

(2) काश ! मैं फ़लदार पेड होता

हज़रते सय्यिदुना अबू उर गिज़ारी رضي الله تعالى عنه ऐक बार ग-ल-बअे षौफ़ के वक्त फ़रमाने लगे : “प्पुदा عَزَّوَجَلَّ की कसम ! अल्दाह عَزَّوَجَلَّ ने जिस दिन मुजे पैदा फ़रमाया था काश ! उस दिन वोह मुजे ऐसा पेड बना देता जिस को काट दिया ज़ाता और उस के फ़ल प्पा लिये ज़ाते.”

(مصنف ابن ابى شيبه ج ٨ ص ١٨٣)

(3) मैं ईन की आजिजी देपना याहता था

जलीलुल कद्र मुहदिस हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी

رحمة الله العفو رमला तशरीफ़ लाअे तो उअरते सय्यिदुना ँब्राहीम बिन अदहम رحمة الله الأكرم ने उन को पैगाम तेज के उमारे पास तशरीफ़ ला कर कोँ उदीस सुनाँये. उअरते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी رحمة الله العفو तशरीफ़ ले आअे तो उअरते सय्यिदुना ँब्राहीम बिन अदहम رحمة الله الأكرم से अर्ज की गँ: “आप अैसे लोगों को यूँ बुलाते हैं !” इरमाया : “मैंँ ँन की तवाअेअ (या'नी आजिजी) देअना याअता था.” (احياء العلوم، ج ۳، ص ۴۳۰)

(4) ँसी वजह से तो वोह “मालिक” हैं

عليه رحمة الله الغفار उअरते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार इरमाते हैं : “अगर कोँ अे'लान करने वाला मस्जिद के दरवाजे पर अडा हो कर अे'लान करे के तुम में से जो सअ से बुरा है वोह बाहर निकले तो अद्लाह عزوجل की कसम ! मुअ से पहले कोँ नहीं निकलेगा, हां ! जिस में दौउने की जियादा ताकत हो वोह मुअ से पहले निकलेगा.” रावी कहते हैं जब उअरते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عليه رحمة الله الغفار की येह आत उअरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رحمة الله الخالق को पहोंयी तो उनहों ने इरमाया : ँसी वजह से तो वोह “मालिक” हैं.

(احياء علوم الدين، كتاب ذم الكبر والعجب، فصل فضيلة التواضع، ج ۳، ص ۴۲۰)

(5) ँमाम इफ़्फ़रुल ँस्लाम के आंसू

ँमाम इफ़्फ़रुल ँस्लाम उअरते सय्यिदुना अली बिन मुहम्मद अऊदवी عليه رحمة الله العفو जब अगदाद शरीफ़ के मद्रसअे निजामिया में सदर मुदरिस मुकररर किये गअे तो पहले ही दिन जब वोह मसन्दे तदरीस पर बैठे तो उनहें अयाल आ गया के येह वोडी मसन्द है जिस पर कभी उअरते सय्यिदुना अबू ँस्हाक शीराजी और दुजुतुल ँस्लाम उअरते सय्यिदुना ँमाम मुहम्मद गजाली عليه رحمة الله انوالا जैसे अकाबिरे उम्मत बैठ कर दर्स दे चुके हैं. येह तसव्वुर आते ही उन के दिल पर अेक अज्जब केइय्यत

तारी हो गई और आंभों से आंसूओं का एक सैलाब उमंड आया. बड़ी देर तक हमामा अपनी आंभों पर रभ कर रोते रहे और ये शेर पढा

خَاتِ الدِّيَارُ فَسُدَّتْ غَيْرَ مَسُودٍ
وَمِنَ الْعِنَاءِ تَفَرُّدِي بِالسُّودِ

या'नी मुल्क बा कमाल लोगों से जाली हो गया और में जो सरदारी के लाईक नहीं था सरदार बन गया. मुज जैसे आदमी का सरदार बन जाना किस कदर तकलीफ़ देह है ! (रुवाय़ी حکایات, ص १०)

(6) कैदियों के साथ जाना

हज़रते सय्यिदुना शैभ शहाबुद्दीन सुहर वर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعُودِي इरमाते हैं : एक मरतबा मुजे अपने पीरो मुर्शिद हज़रते सय्यिदुना ज़ियाउद्दीन अबू नज्जब सुहर वर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعُودِي के हमराह मुल्के शाम जाने का इत्तिफ़ाक हुवा. किसी मालदार शप्स ने जाने की कुछ अश्या कैदियों के सरो पर रभवा कर शैभ की पिदमत में त्मिजवाई. उन कैदियों के पाउं बेरियों में जकडे हुअे थे. जब दस्तर प्वान बिछाया गया तो आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعُودِي ने पादिम को हुक्म दिया : “उन कैदियों को बुलाओ ताके वोह भी दरवेशों के हमराह एक ही दस्तर प्वान पर बैठ कर जाना जायें.” लिहाजा उन सब कैदियों को लाया गया और एक दस्तर प्वान पर बिठा दिया गया. शैभ ज़ियाउद्दीन अबुन्नज्जब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيب अपनी निशस्त से उठे और उन कैदियों के दरमियान जा कर इस तरह बैठ गअे के गोया आप इन्ही में से एक हैं. उन सब ने आप के हमराह बैठ कर जाना जाया. उस वक्त आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعُودِي की तभीअत की आजिजी व इन्किसारी हमारे सामने ज़ाहिर हुई के इस कदर इल्मो इज़ल और मर्तबा व मकाम के बा वुजूद आप ने तक़्बुर से अपने आप को बयाअे रभा.

(الابريز، ج ۲، ص ۴۶، ملخصاً)

(7) कुत्ते के लिये रास्ता छोड़ दिया

उजरते सय्यिद्दुना शैभ अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जय्यिद आलिमे दीन और बड़ोत बड़े फ़कीह थे. ओक दिन शदीद बारिश और कीयउ के मौसिम में अपने अकीदत मन्द्ों की हमराही में कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे के सामने से ओक कुत्ता आता दिभाई दिया, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ दीवार के साथ लग गये और कुत्ते के गुजरने के लिये रास्ता छोड़ दिया. जब कुत्ता करीब आया तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ नियली तरफ़ कीयउ में आ गये और रास्ते का डीपरी साफ़ छिस्सा कुत्ते के गुजरने के लिये छोड़ दिया. जब कुत्ता गुजर गया तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के हमराहियों ने देखा के आप के येहरे पर अफ़सोस के आसार मौजूद हैं. उन्हों ने अर्ज़ की : “उजरत ! आज हम ने ओक हैरान कुन बात देभी है के आप ने कुत्ते के लिये साफ़ रास्ता छोड़ दिया और फुद कीयउ में पाँउ रख दिया !” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जवाब दिया : “जब मैं पड़ले दीवार के साथ लगा तो मुझे भयाल आया के मैं ने अपने आप को बेहतर समजते हुअे अपने लिये साफ़ जगह मुन्तख़ब कर ली, मैं उरा के मेरी ईस ह-र-कत के बाईस कहीं अल्लाह तआला मुज से नाराज न हो जाये, लिहाजा मैं वोह जगह छोड़ कर कीयउ में आ गया.”

(الابريز، ج ٢، ص ١٤٦)

(8) अपने दिल की निगरानी करते रहो

उजरते सय्यिद्दुना बा यज़ीद बिस्तामी قَدِيسِ سِرُّهُ السَّامِي को ओक मर्तबा येह तसव्वुर हो गया के “मैं बड़ोत बड़ा बुजुर्ग और शैभे वक्त हो गया हूँ, लेकिन ईस के साथ येह भयाल त्मी आया के मेरा येह सोयना इफ़्र व तकब्बुर का आईनादार है.” युनान्थे झौरन पुरासान का रुख़ किया और ओक मन्ज़िल पर पड़ोय कर हुआ की : “ओ अल्लाह जब तक जैसे कामिल बन्दे को नहीं भेजेगा जो मुज को

मेरी हकीकत से इ शनास करा सके उस वक्त तक यहीं पडा रहूंगा.”
तीन दिन इसी तरह गुजर गये तो चौथे दिन एक बुजुर्ग
وَيْتُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ; ॐट पर आये और आप عَلَيْهِ; ॐट पर आये और आप
आने का इशारा किया लेकिन इस इशारे के साथ ॐट के पाँउ जमीन
में धंसते चले गये. उन्होंने ने युत्नते हुये लहजे में कहा : “क्या तुम
येह याहते हो के मैं अपनी जुली हुँ आंभों को बन्द कर लूँ और
बन्द आंभ फोल दूँ और बा यज़ीद समेत पूरे बिस्ताम को गरक कर
दूँ ?” येह सुन कर आप घबरा गये और पूछा : “आप कौन हैं
और कहां से आये हैं ?” जवाब दिया के “जिस वक्त तुम ने
अल्हाल तआला से अहूद किया था उस वक्त मैं यहां से तीन हज़ार
मील दूर था और इस वक्त मैं सीधा वहीं से आ रहा हूँ, मैं तुम्हें
बा फबर करता हूँ के अपने क़्लब की निगरानी करते रहो.” येह कह
कर वोह बुजुर्ग गाँठन हो गये. (तذكرة الاولياء فارسی، ص १६०)

(9) जब दरियाये दिजला इस्तिक्बाल के लिये बढा.....

हज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्तामी سُرَّة السَّامِي इरमाते
हैं के एक मर्तबा मैं दरियाये दिजला पर पड़ोया तो पानी ज़ेश
मारता हुवा मेरे इस्तिक्बाल को बढा लेकिन मैं ने कहा : “मुझे तेरे
इस्तिक्बाल से (إِنَّ سَاءَ اللَّهُ مَخْرُجًا) शम्मा बराबर (या'नी थोडा सा) ली
गुइर न होगी क्यूंके मैं अपनी तीस सालह रियाज़त को तक़्क़ुबुर कर
के हरगिज़ ज़ायेअ नहीं कर सकता.” (तذكرة الاولياء فارسی، ص १३६)

(10) अब मज़ीद की गुन्जाइश नहीं

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी سُرَّة النُّورَانِي
इशाद इरमाते हैं : “अगर सारी मज्लूक ली मुझे कमतर मर्तबा
देने और ज़लील करने की कोशिश करे तो नहीं कर सकेगी क्यूंके मैं ने

जुद ही अपने नफ़्स को धतना जलील व कमतर कर दिया है जिस में मज़ीद कमी नहीं हो सकती.” (الحديقة الندية، ج ١، ص ٥٩١)

अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की धन सभ पर रहमत हो और धन के सदके उमारी मग़िरत हो

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

(2) धबादत व रियाजत

धलम से ली बढ कर ज़े यीज तक़ब्बुर का बाधस बन सकती है वोह कसरते धबादत है म-सलन किसी धस्लामी लार्ध को इर्ज धबादत के साथ साथ नवाङ्गिल म-सलन तहज्जुद, धशराक व याशत, अक्वाबीन के नवाङ्गिल, रोजाना तिलावते कुरआन, नफ़ली रोजे रबने, जिको अजकार और दीगर वजाधङ्क करने की सआदत मुयस्सर हो तो वोह बा'ज अवक़ात दीगर धस्लामी लार्धयों को ज़े नफ़ली धबादत नहीं कर पाते, हकीर समजना शुइअ कर देता है जिस का बा'ज अवक़ात ज़बान से और कबी धशारों किनायों से धजहार ली कर बैठता है. धबादत बजाते ज़ुद अेक निहायत ही आ'ला यीज है लेकिन बा'ज धस्लामी लार्ध धबादत गुज़ार होने के ज़ो'म में ज़ुद को “बडा पडोंया हुवा” समजने लगते हैं और दूसरों को गुनाहगार करार दे कर हर वक़्त उन की अैबजूध में मुब्तला रहते हैं. ज़ुद को नेक व पारसा और नज़ात पाने वाला और दूसरों को गुनाहगार व बदकार और तबाह व बरबाद होने वाला समजना तक़ब्बुर की बढ तरीन शक़ल है.

धबादत से पैदा होने वाले तक़ब्बुर का धलाज

अैसे धस्लामी लार्ध को येह बात अपने दिलो दिमाग में बिठा लेनी याहिये के अगर वोह नफ़ली धबादतें करता ली है तो धस में उस का कया क़माल ! येह तो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ का करम है के उसे

ईबादत की तौफ़ीक अता इरमाई नीज़ ईबादत वोही मुफ़ीद है जिस में शराईते अदा के साथ साथ शराईते कबूलिय्यत म-सलन निय्यत की दुरुस्ती वगैरा भी पाई जाअे और वोह मुफ़िसिदात (या'नी इंसिद कर देने वाली चीज़ों) से भी मइकूज़ रहे. क्या ખબर के जिन ईबादतों पर वोह ईतरा रहा है शराईत की कमी की वजह से बारगाहे ईलाही ۞ में मकबूल ही न हों ! या इर तक़्बुर की वजह से ईन का सवाब ही जाता रहे, बल्के वोह तक़्बुर की वजह से हो सकता है बजाअे जन्नत के ۞ जहन्नम में पहुँच जाअे.

ईसराईली ईबादत गुज़ार और गुनहगार

बनी ईसराईल का अेक शप्स जो बहोत गुनहगार था अेक मरतबा बहोत बडे आबिद (या'नी ईबादत गुज़ार) के पास से गुज़रा जिस के सर पर बादल साया इंगन हुवा करते थे. उस गुनहगार शप्स ने अपने दिल में सोया : “मैं बनी ईसराईल का ईन्तिलाई गुनहगार और येह बहोत बडे ईबादत गुज़ार हूँ, अगर मैं ईन के पास बैहूँ तो उम्मीद है के अल्लाह तआला मुज़ पर भी रहम इरमा दे.” येह सोय कर वोह उस आबिद के पास बैठ गया. आबिद को उस का बैठना बहोत ना गवार गुज़रा, उस ने दिल में कहा : “कहां मुज़ जैसा ईबादत गुज़ार और कहां येह परले द-रजे का गुनहगार ! येह मेरे पास कैसे बैठ सकता है !” युनान्हे उस ने बडी हकारत से उस शप्स को मुफ़ातब किया और कहा : “यहां से उठ जाओ !” ईस पर अल्लाह तआला ने उस जमाने के नबी ۞ पर वह्य त्मेज के “उन दोनों से इरमाईये के वोह अपने अमल नअे सिरे से शुइअ करें, मैं ने ईस गुनहगार को (ईस के हुस्ने जन के सभब) बप्श दिया और ईबादत गुज़ार के अमल (उस के तक़्बुर के बाईस) जाअेअ कर दिये.”

(احياء علوم الدين، ج ۳، ص ۲۹)

भीठे भीठे ईस्लामी त्माईयो ! देखा आप ने के जब अेक गुनहगार शप्स ने षौके फ़ुदा ۞ को अपने दिल में बसाया और आजिजी को अपनाया तो उस की बप्शिश कर दी गई जबके तक़्बुर

करने वाले नेक परहेज गार ईन्सान की नेकियां बरबाद हो गईं.

मेरा हर अमल बस तेरे वासिते हो
कर ईप्त्वास औसा अता या ईलाही ^{عَزَّوَجَلَّ}

बद नसीब आबिद

बनी ईसराईल में अेक शप्स अेक आबिद के पास आया.

वोह उस वक्त सजदा रेज था, उस शप्स ने आबिद की गरदन पर पाउं रभ दिया, आबिद ने सप्त तैश के आलम में कहा : “पाउं उठाओ ! अद्लाह तआला की कसम ! वोह तुम्हें नहीं बप्शेगा.” तो अद्लाह ^{عَزَّوَجَلَّ} ने ईशाद इरमाया : “मेरा बन्दा मुज पर कसम भाता है के मैं अपने बन्दे को नहीं बप्शूंगा, बेशक मैं ने उसे बप्श दिया.”

(مجمع الزوائد، كتاب التوبة، الحديث ١٧٤٨٥ ج ١٠ ص ٣١٧)

मेरे सबब कुलां बरबाद हो गया !

ईस रिवायत से वोह नादान ईस्लामी भाई ईब्रत पकड़ें के अगर उन के सामने कोई शप्स दूसरे मुसल्मान को अजिय्यत पड़ोयाये तो उन्हें कोई ना गवारी मदसूस नहीं होती, माथे पर शिकन तक नहीं आती लेकिन जब येही शप्स भुद ईन की “शान” में गुस्ताफी की जुरअत कर बैठे तो येह कहते सुनाई देते हैं के देभना ! अन्करीब ईसे अद्लाह तआला की तरफ से कैसी सजा मिलती है ! फिर जब वोही शप्स तकदीरे ईलाही ^{عَزَّوَجَلَّ} से किसी मुसीबत में गरिफ्तार हो जाता है तो येह समजते बढके बोव पउते हैं : “देभा ! उस का अन्जाम !” और अपने तई गुमान करते हैं के अद्लाह तआला ने मेरी वजह से बदला ले लिया है, हावांके उस शप्स को मुसीबत पड़ोयना ईस बात की दलील नहीं है के ईस का येह हाल “मौसूफ़” को तकलीफ़ पड़ोयाने की वजह से हुवा है.

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! क्या आप को नहीं मा'लूम के

अल्लाह तआला के कर्छ अम्बिया عَلَيْهِ السَّلَام (जो बारगाहे ईलाही عَزَّوَجَلَّ में यकीनन व कत्अन मकबूल थे) को कुर्क़ार ने शहीद किया, उन्हें तरह तरह की अजियतें दीं मगर अल्लाह तआला ने उन कुर्क़ार को मोहलत दी और भा'जों को दुन्या में सजा नहीं दी फिर उन में से भा'ज तो ईस्लाम के दामन में ली आ गये और दुन्या व आभिरत की सजा से बय गये. तो क्या आप जुद को अल्लाह तआला के नजदीक अम्बिया عَلَيْهِ السَّلَام से ली जियादा मुअज़्ज़ा समज बैठे हें के रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ ने आप का "ईन्तिकाम" तो ले लिया मगर उन अम्बियाये किराम عَلَيْهِ السَّلَام का कोर्छ ईन्तिकाम नहीं लिया ! अैन मुम्किन है के आप जुद ईस जुद पसन्दी और तक़्क़ुर की वजह से गज्जे जब्बार عَزَّوَجَلَّ के शिकार हो कर अजाब के हकदार करार पा युके हों और आप को ईस की षबर ली न हो.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

भीठे भीठे ईस्लामी लाईयो ! हकीकी ईबादत गुजार बन्दों के म-दनी किरदार की यन्द ज-लकियां मुला-हजा इरमाईये और अपनी ईस्लाह का सामान कीजिये !

लोगों की तकलीफों का सबब मैं हूँ !

जब कभी आंधी चलती या बिजली गिरती तो हजरते सय्यिदुना अता सु-लमी رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي عَلَيْهِ इरमाते : लोगों को जो तकलीफ पड़ोयती है ईस का सबब मैं हूँ, अगर अता झौत हो जाये तो लोगों की जान ईस मुसीबत से छूट जाये. (احياء العلوم، ج ३، ص ६२९)

तुम्हें तअज्जुब नहीं होना चाहिये

हजरते सय्यिदुना बिशर बिन मन्सूर رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفُور उन लोगों में से थे जिन को देख कर अल्लाह तआला और आभिरत का धर याद आता था क्यूंके वोह ईबादत की पाबन्दी करते थे, युनान्चे

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهٖ ने ओक दिन तवील नमाज़ पढी, ओक शप्स पीछे षडा देष रडा था, डरते सय्यिदुना बिशर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهٖ को मा'लूम डो गया आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهٖ ने नमाज़ से सलाम डैरा तो आज़िजी करते डुअे ईशाद इरमाया : “ओ कुछ तुम ने मुज़ से देषा डै ईस से तुम्हें तअज़ुब नडीं डोना याडिये, क्यूंके शैताने लईन ने इरिशतों के डमराड ओक तवील अर्से तक ईबादत की इर उस का ओ अन्जाम डुवा वोड वाडेड डै.”

(احياء علوم الدين، كتاب ذم الكبر والعجب، فصل بيان ذم العجب وآفاته، ج ۳، ص ۴۵۳)

दूसरा ईमाम तलाश कर लो

डरते सय्यिदुना डुअैई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهٖ ने ओक गुरौड को नमाज़ पढाई, जब नमाज़ से सलाम डैरा तो इरमाया : “कोई दूसरा ईमाम तलाश करो या अकेले अकेले नमाज़ पढो, क्यूंके मेरे दिल में येड षयाल पैदा डो गया के मुज़ से अइजल कोई नडीं डै.”

(احياء علوم الدين، كتاب ذم الكبر والعجب، فصل بيان مابه التكبر، ج ۳، ص ۴۲۸)

अद्लाड كَرِّ وَوَجَلُّ كِي ईन सष पर रडमत डो और ईन के सडके डमारी मग़िरत डो

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

(3) मालो दौलत

तक़्क़ुर का ओक सषष मालो दौलत और दुन्यावी ने'मतों की इरावानी डी डै. जिस के पास कार, बंगला, बैंक बेलेन्स और कामकाज के लिये नोकर याकर डों वोड षा'ज अवकात तक़्क़ुर की आइत में मुष्तला डो ज़ता डै इर उसे गरीब लोग जमीन पर रैंगने वाले कीडे मकोडों की तरड डकीर डिषाई देते डैं (मगर जिसे

अल्लाह तआला बयाअे). बसा अवकात ईस किस्म के मु-तकब्बिराना जूम्बे उस के मुंह से निकलते सुनाई देते हैं: “तुम मेरे मुंह लगते हो ! तुम्हारे जैसे लोग तो मेरी जूतियां साफ़ करते हैं, मैं अेक दिन में ईतना अर्य करता हूं जितना तुम्हारा साल भर का अर्य है.”

मालो दौलत से पैदा होने वाले तकब्बुर का ईलाज

मालो दौलत की कसरत के बाईस पैदा होने वाले तकब्बुर का ईलाज यूं हो सकता है के ईन्सान ईस बात का यकीन रभे के अेक दिन अैसा आअेगा के उसे येह सभ कुछ यहीं छोड कर ખाली हाथ दुन्या से जाना है, कइंन में थेली होती है न कअ्र में तिजोरी, फिर कअ्र को नेकियों का नूर रोशन करेगा न के सोने यांटी की यमक दमक ! अल गरज येह दौलत फ़ानी है और छिरती फिरती छाउं है के आज अेक के पास तो कल किसी दूसरे के पास और परसों किसी तीसरे के पास ! आज का साहिबे माल कल कंगाल और आज का कंगाल कल मालामाल हो सकता है, तो अैसी ना पाअेदार शै की वजह से तकब्बुर में मुब्तला हो कर अपने रभ عَزَّوَجَلَّ को क्यूं नाराज किया जाअे !

बिला हिसाब जहन्नम में दाखिला

हुस्ने अख्लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अकबर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आलीशान है : “छ किस्म के लोग बगैर हिसाब के जहन्नम में दाखिल होंगे. (1) उ-मरा जुल्म की वजह से (2) अरब अ-सबिय्यत (या'नी तरफ़दारी) की वजह से (3) रईस और सरदार तकब्बुर की वजह से (4) तिजारत करने वाले जूट की वजह से (5) अहले ईल्म हसद की वजह से (6) मालदार बुखल की वजह से.”

(کنز العمال، کتاب المواعظ والرفاق..... الخ، قسم الاقوال، الحدیث ۲۳، ۴۴۰، ج ۱، ص ۳۷)

मालदार ईस्लामी त्वाँयों को याहिये के हदीसे पाक में बयान कर्दा ईस इजीवत को हासिल करने की कोशिश करें :

आजिजी करने वाले दौलत मन्द के लिये जुश खबरी

मज्जने जूदो सभावत, पैकरे अ-ज-मतो शराइत
 (المعجم الكبير، الحديث: ٤٦١٦، ج ٥، ص ٧٢) का इरमाने आलीशान है : “जुश खबरी है उस शप्स के लिये जो तंगदस्ती न छोते हुअे तवाजोअ (या'नी आजिजी) इप्तिवार करे और अपना माल जइज कामों में खर्च करे और मोहताज व मिसकीन पर रइम करे और अहले इल्म व इक्कह से मेलजोल रभे.”

मालदार मु-तकब्बिर को अनोषी नसीहत

उजरते सय्यिदुना हसन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अेक अमीर को मु-तकब्बिराना याल यलते हुअे देखा तो उस से इरमाया के अै अहमक ! तकब्बुर से इतराते हुअे नाक यढा कर कहां देख रहा है ? क्या उन ने'मतों को देख रहा है जिन का शुक्र अदा नहीं किया गया या उन ने'मतों को देख रहा है के जिन का तजकिरा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अहकाम में नहीं. जब उस ने येह बात सुनी तो मा'जिरत करने हाजिर हुवा तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इर्शाद इरमाया : “मुज से मा'जिरत न कर बल्के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर क्या तूने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह इरमान नहीं सुना :

तर-ज-मअे क-जुल इमान : और

وَلَا تَسِيسْ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَن

जमीन में इतराता न यल बेशक
 हरगिज जमीन न खीर डालेगा और

تَحْرِقُ الْأَرْضَ وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا

हरगिज बुलन्दी में पहाडों को न
 पडोंयेगा. (प १०, بنى اسرائيل: ३७)

(الزواج عن اقتراف الكبائر، ج ١، ص ١٤٩)

(4) उसभ व नसभ

तकब्बुर का एक सभभ उसभ व नसभ भी बनता है के ईन्सान अपने आबाओ अजदाद के बल बूते पर अकडता और दूसरों को हकीर जानता है।

उसभ व नसभ की वजह से पैदा होने वाले तकब्बुर का ईलाज दूसरों के कारनामों पर धमन्ड करना जहालत है, किसी शाईर ने कहा है :

لَيْسُنْ فَخَرْتِ بِأَبَاءِ ذَوِي شَرَفٍ
لَقَدْ صَدَقْتَ وَلَكِنْ بِنَسْ مَاوَلَدُوا

तरजमा : तुम्हारा अपने ईज्जत व शरफ़ वाले बाप, दादा पर इफ़्र करना तो दुरुस्त है लेकिन उन्हीं ने तुज जैसे को जन कर बुरा किया। (या'नी तेरे आबा ने बडे बडे कारनामे सर अन्जाम दिये मगर तेरे जैसा ना फलफ़ (जो दूसरों के कारनामों पर इफ़्र कर के नाम कमाता है) को जनम दे कर बहोत बुरा काम किया है)

आबाओ अजदाद पर इफ़्र मत करो

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आलीशान है : “अपने इत शुदा आबाओ अजदाद पर इफ़्र करने वाली कौमों को बाज आ जाना याहिये, क्यूंके वोही जहन्नम का कोअेला हैं, या वोह कौमें अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के नजदीक गन्दी के उन कीडों से भी हकीर हो जाअेंगी जो अपनी नाक से गन्दी को कुरेदते हैं, अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम से जाहिलियत का तकब्बुर और उन का अपने आबा पर इफ़्र करना ખत्म इरमा दिया है, अब आदमी मुत्तकी व मोमिन डोगा या बह भप्त व बहकार, सभ लोग हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद हैं और हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को मिट्टी से पैदा किया गया है।”

(جامع الترمذی، الحديث (۳۹۸)، ج ۵ ص ۴۹۷)

9 पुश्ते जलन्म में जाअेंगी

सुल्ताने ईन्सो जान, रलमते आ-लमियान, सरवरे जीशान
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : “मूसा के जमाने में दो
 आदमियों ने बाहम इभ्र किया, उन में से ओक (जो के काइर था) ने
 कहा “मैं कुलां का भेटा कुलां हूँ” ईस तरह वोह नव पुश्ते शुमार कर
 गया. अल्लाह तआला ने हजरते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ
 की तरफ वइय भेज के “उस से इरमा दीजिये के वोह नव की नव
 पुश्ते (कुइ की वजह से) जलन्म में जाअेंगी और तुम उन के साथ
 दसवें होगे.”

(المعجم الكبير، الحديث ٢٨٥، ج ٢٠، ص ١٤٠، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى النَّبِيِّ!
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

(5) हुस्नो जमाल

तकब्बुर का पांचवां सबभ हुस्नो जमाल है के बा'ज अवकात
 ईन्सान अपनी भूब सूरती की वजह से मु-तकब्बिर हो जाता है,
 किसी का रंग गोरा है तो वोह काले रंग वाले को, कोई कद आवर है
 तो वोह छोटे कद वाले को, किसी की आंभें बड़ी बड़ी हैं तो वोह
 छोटी आंभों वाले को हकीर समजना शुइअ कर देता है, उमूमन येह
 भीमारी मर्दों की निस्बत औरतों में जियादा पाई जाती है.

हुस्नो जमाल की वजह से पैदा होने वाले तकब्बुर के ईलाज

(1) हुस्नो जमाल के बाईस पैदा होने वाले तकब्बुर का
 ईलाज करने के लिये अपनी ईब्तिदा और ईन्तिहा पर गौर कीजिये
 के मेरा आगाज नापाक नुतइा (या'नी गन्दा कतरा) और अन्जाम
 सडा हुवा मुर्दा है. उम्र के हर दौर में हुस्न यकसां नही रहता बल्के
 वक्त गुजरने के साथ साथ मांद पड जाता है, कभी कोई छादिसा भी
 ईस हुस्न के आतिमे का सबभ बन जाता है, भौलता हुवा तेल तो

बड़ोत बड़ी चीज है, उबलता दूध भी सारे दुस्न को गारत करने के लिये काड़ी है. ये ल भी पेशे नजर रहे के ईन्सान जब तक दुन्या में रहता है अपने जिस्म के अन्दर मुप्तलिक गन्दगियां म-सलन पेट में पापाना व पेशाब और रीह (या'नी बढबूदार हवा), नाक में रीठ, मुंड में थूक, कानों में बढबूदार मैल, नापुनों में मैल, आंभों में कीयड और पसीने से बढबूदार बगलें लिये झिरता है, रोजाना कई कई बार ईस्तिन्ना पाने में अपने हाथ से पापाना व पेशाब साफ़ करता है, क्या इन सब चीजों के होते हुअे इकत गोरी रंगत, डेलडोल और कद व कामत नीज यौडे यकले सीने वगैरा पर तकब्बुर करना जैब देता है ! यकीनन नहीं. उजरते सय्यिदुना अहनइ बिन केस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : “आदमी पर तअज्जुब है के वोह तकब्बुर करता है हालांके वोह दो मर्तबा पेशाब गाह से निकला है.” (الزواج عن اقتراف الكياتر، ج ١، ص ١٤٩) उजरते सय्यिदुना असन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : “आदमी पर तअज्जुब है के वोह रोजाना ओक या दो मर्तबा अपने हाथ से नापाकी धोता है झिर भी जमीन व आस्मान के बाहशाह (या'नी अल्लाह तआला) से मुकाबला करता है.” (اليضا)

उजरते सय्यिदुना लुकमान उकीम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की नसीहत

उजरते लुकमान उकीम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने बेटे को नसीहत करते हुअे ईशाह इरमाया : “अै मेरे बेटे ! उस शप्स को तकब्बुर करना किस तरह रवा (या'नी ज़र्रज) है जिस की अस्ल येह है के उसे पाँउ से रौंदा गया है या'नी उस का भमीर मिट्टी है और क्यूंकर तकब्बुर करता है जबके उस की अस्ल ओक गन्दा कतरा है.”

(الحديقة الندية، ج ١، ص ٥٧٩)

उजरते अबू जर और उजरते बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की डिंकायत

उजरते सय्यिदुना अबू जर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ओक बार उजरते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को सियाह रंग पर आर (या'नी शर्भ)

दिल्लाई, उन्हीं ने रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की भिदमत में शिकायत की तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उजरते अबू उर रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से ईस की तस्दीक करने के बा'द ईशाई इरमाया : “अै अबू उर (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ! तुम्हारे दल में अभी तक ज़ादललख्यत के तक़्क़ुबुर में से कुछ बाकी है.” येह सुन कर उजरते सय्यदुना अबू उर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने आप को जमीन पर गिरा दिया और कसम भाई के जब तक उजरते सय्यदुना बलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ईन के रुप्सारों को अपने कदमों से नहीं रौंढेंगे वोह अपना सर नहीं उठाओंगे. युनान्हे उन्हीं ने सर न उठाया उताके उजरते सय्यदुना बलाल रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ईस तरह का अमल किया.

(شرح صحيح البخارى لابن بطّال، باب السلام من الاسلام، ج ١، ص ٨٧)

हुसुन वाला नज़ात पायेगा..... मगर कब ?

(2) इसीनो जमील डोते हुअे ली आज़िजी ईप्तिथार कीजिये और ईस इज़ीलत के उकदार बनिये. शईउल मुज़्ज़िनबीन, अनीसुल गरीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने दल नशीन है : “जो इसीनो जमील और शरीफ़ुल अस्ल (या'नी गिरे भानदान वाला) डोने के बा वुजूद मुन्कसिरुल मिजाज डोगा तो वोह उन लोगों में से डोगा जिन्हें अद्लाह عَزَّوَجَلَّ कियामत के दिन नज़ात अता इरमायेगा.”

(حلية الاولياء، رقم: ٣٧٧٧، ج ٣، ص ٢٢٢)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

(6) काम्याभियां

ईन्सान की जिन्दगी काम्याबी व नाकामी की दास्तान है, जब मुसल्लल काम्याभियां बा'ज ईस्लामी त्माईयों के कदम यूमती हें तो वोह पै दर पै ना कामियों के शिकार डोने वाले दुभियारों को उकीर समजना शुइअ कर देते हें, भुद को भेउद तजरिबा कार

गरदानते हुअे उन्हेँ भे वुकूफ़, नादान, गधा और न जाने कैसे कैसे अडकाबात से नवाजते हैं.

काम्याबियों की वजह से पैदा होने वाले तक़्बुर का ँलाज

काम्याबियों पर झूले न समा कर जामे से बाहर होने वालों को येह नहीं भूलना याहिये के वक्त हमेशा अेक सा नहीं रहता, भुलन्धियों पर पछोंयने वालों को अक्सर वापस पस्ती में ल्मी आना पडता है, हर क्माल को ज्वाल है. आप को काम्याबी मिली ँस पर अल्लाह तआला का शुक् अदा कीजिये न के अपना क्माल तसव्वुर कर के ना शुकों की सफ़ में पडे होने की जसारत ! फिर जिसे आप “काम्याबी” समज रहे हैं उस का सफ़र दुन्या से शुद्दअ हो कर दुन्या ही में भत्म हो जाता है, हकीकी काम्याभ तो वोह है जो क्ब्रो हशर में काम्याभ हो कर रहमते ँलाही عَزَّوَجَلَّ के साअे में जन्मत में दाभिल हो गया, जैसाके पारह 28 सूअे तगाभुन की आयत 9 में ँशदि ँलाही عَزَّوَجَلَّ है :

وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا
 तर-ज-मअे क-जुल ँमान : जो अल्लाह
 पर ँमान लाअे और अख्श काम करे
 يُكْفِرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ
 अल्लाह उस की भुराँयां उतार देगा
 تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
 और उसे भागों में ले जाअेगा जिन के
 فِيهَا أَبَدًا ۗ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ॐ नीये नहरेँ भडेँ के वोह हमेशा उन में
 रहें येही बडी काम्याबी है.

(प २८ التّغابن ९)

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْرُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

(7) ताक़त व कुव्वत

तक़्बुर का अेक सभभ ताक़त व कुव्वत ल्मी है, जिस का कद काठ निकलता हुवा हो, भाजूओं की मछलियां इडकेँ और सीना यौडा हो तो वोह बसा अवकात क्मजोर जिस्म वाले को हकीर समजना शुद्दअ कर देता है.

ताकत व कुव्वत की वजह से पैदा होने वाले तकब्बुर का ठलाज

ताकत व कुव्वत से पैदा होने वाले तकब्बुर का ठलाज करने के लिये यूँ झिंके मदीना कीजिये के कुव्वत व कुरती तो यौपायों और दरिन्दों में ली होती है बल्के उन में ईन्सान से जियादा ताकत होती है तो फिर अपने अन्दर और जानवरों में “मुशतरक” सिफत पर तकब्बुर क्यूँ किया जाये ! हावांके हमारे जिस्म की ना तुवानी का तो येह हाल है के अगर अेक दिन बुभार आ जाये तो ताकत व कुव्वत का सारा नशा उतर जाता है, मा'मूली सी गरमी में जरा पैदल चलना पडे तो पसीने से शराबूर हो कर निढाल हो जाते हैं, सर्द हवा चले तो कपकपाने लगते हैं. बडी बीमारियां तो बडी ही होती हैं ईन्सान की डाढ में अगर दर्द हो जाये तो उस वक्त पूब अन्दाजा हो जाता है के उस की ताकत व कुव्वत की हैसियत क्या और कितनी है ! फिर जब मौत आयेगी तो येह सारी ताकत व कुव्वत धरी की धरी रह जायेगी और बे बसी का आलम येह होगा के अपनी मरजी से हाथ तो क्या उंगली ली नहीं हिला सकेंगे. लिहाजा मेरे मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! ऐसी आरिजी कुव्वत पर नाजां होना हमें जैब नहीं देता.

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْب!

(8) ओहदा व मन्सब

कभी ओहदा व मन्सब की वजह से ली ईन्सान तकब्बुर का शिकार हो जाता है.

ओहदा व मन्सब की वजह से पैदा होने वाले तकब्बुर का ठलाज

ऐसे ईस्लामी भाईयों को याहिये के अपना जेहन बनाओं के इानी पर इफ्र नादानी है, ईज्जत व मन्सब कब तक साथ देंगे, जिस मन्सब के बल बूते पर आज अकडते हैं कल कलां को छिन गया तो शायद उन्ही लोगों से मुंह छुपाना पडे जिन से आज तहकीर

आमेज सुलूक करते हैं, आज जिन पर हुकूम यलाते हैं रीटायर्मेन्ट के दूसरे दिन उन्ही की भिदमत में हाजिर हो कर पेन्शन केस निपटवाना है ! अल गरज इनी चीजों पर गुजर व तकब्बुर क्यूंकर किया जाये ! इस लिये कैसा ही बडा मन्सब या ओडदा मिल जाये अपनी औकात नहीं भूलनी याहिये. आ'ला उजरत ईमाम अहमद रजा पान
 فرماتے ہیں : “आदमी को अपनी हालत का लिहाज
 रखते हैं न के अपने को भूले या सताईशे मरदुम (या'नी आदमियों के
 तारीफ करने) पर झूले.” (ملفوظات اعلیٰ حضرت ص ۱۶)

“आजिजी” के पांय हुजुर की निस्बत से 5 डिक्कायात

(1) अपनी औकात याद रખता हूं

अयाज, सुल्तान मडभूद गज़नवी का अेक अदना गुलाम था फिर तरक्की करते करते उस का मडभूब तरीन वज़ीर बन गया. अयाज की काम्याबियां हासिदीन दरबारियों को अेक आंभ न लाती थीं. वोड मौकअ की ताक में रहते थे के किसी तरह अयाज को मडभूद की नज़रों से गिरा दें. आभिरे कार उन्हें अेक मौकअ मिल ही गया. हुवा यूं के अयाज का मा'भूल था के रोजाना मप्सूस वक्त में अेक कमरे में यला जाता और कुछ देर गुज़ार कर वापस आ जाता. दरबारियों ने मडभूद के कान भरना शुज़अ किये के ज़र अयाज ने शाही पज़ाने में जुर्द जुर्द कर के माल जम्अ कर रखा है जिसे देपने के लिये कमरअे पास में जाता है, वोड उस कमरे को ताला लगा कर रਖता है और किसी और को अन्दर दाखिल होने की ईजाजत नहीं देता. मडभूद को अगर्ये अयाज पर मुकम्मल अे'तिमाद था मगर दरबारियों को मुत्मईन करने के लिये अेक वज़ीर को कडा के उस कमरे का ताला तोड डालो, वहां जे कुछ मिले वोड तुम्हारा है. वज़ीर और दीगर दरबारी जुशी जुशी अयाज के कमरे में जा घुसे. मगर येड

क्या ! वहां अेक पुराने बोसीदा लिबास और यप्पलों के सिवा कुछ था ही नहीं. दरबारियों की आंभें इटी की इटी रह गईं. मडमूद ने अयाज से उन कपड़ों और यप्पलों के बारे में दरयाइत किया तो उस ने बताया के येह मेरी गुलामी के दौर की यादगार हें जिन्हें देष कर में अपनी औकात याद रખता हूं और खुद को मौजूदा उरुज पर तकब्बुर में मुब्तला नहीं होने देता. येह सुन कर मडमूद अपने वझादार जादिम अयाज से और जियादा मु-तअस्सिर नजर आने लगा और दरबारियों का मुंह काला हुवा.

(مشوى مولانا روم (سزجم)، دفتر پنجم، ص ۴۵، ملخصاً)

(2) सारी सत्तनत की कीमत अेक गिलास पानी

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 540 स-इहात पर मुश्तमिल किताब, "मद्वूजाते आ'ला हजरत" सईहा 376 पर है : हजरत ખલીફा હારૂન રશીદ رحمة الله تعالى عليه; उ-लमा दोस्त थे. दरबार में उ-लमा का मजमअ हर वक्त लगा रहता था. अेक मर्तबा पानी पीने के वासिते मंगाय़ा, मुंह तक ले गअे थे, पीना याहते थे के अेक आलिम साहिब ने इरमाया : "अमीरुल मुअमिनीन ! जरा ठहरिये ! मैं अेक बात पूछना याहता हूं." इौरन खलीफ़ा ने हाथ रोक लिया. उन्हीं ने इरमाया : "अगर आप जंगल में हों और पानी मुयस्सर न हो और प्यास की शिदत हो तो ईतना पानी किस कदर कीमत दे कर खरीदेंगे ?" इरमाया : "वद्लाह ! आधी सत्तनत दे कर." इरमाया : "अस पी लीजिये !" जब खलीफ़ा ने पी लिया, उन्हीं ने इरमाया : "अब अगर येह पानी निकलना याहे और न निकल सके (या'नी पेशाब ही बन्द हो जअे) तो किस कदर कीमत दे कर ईस का निकलना मोल (या'नी खरीद) लेंगे ?" कहा : "वद्लाह ! पूरी सत्तनत दे कर." ईशाई इरमाया : "अस आप की सत्तनत की येह हकीकत है

के एक मर्तबा एक युल्लू पानी पर आधी बिक जाओ और दूसरी बार पूरी. इस (हुकूमत) पर जितना चाहे तकब्बुर कर लीजिये !”

(तاریخ الخُلُفَاء، ص ۲۹۳ ملخصاً)

(3) सालारे लश्कर को नसीहत

उजरते सय्यिदुना मुतरिफ़ि बिन अब्दुल्लाह عَلَيْهِ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक लश्कर के सिपह सालार “मुहल्लब” को रेशमी जुब्बे में मल्लूस अकड कर यलते हुओ देखा तो आप عَلَيْهِ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरमाया : ओ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल को येह याल पसन्द नही. उस ने जवाबन कहा : क्या तुम मुझे पहचानते नही के मैं कौन हूं ! इरमाया : क्यूं नही, मैं तुम्हें पूज पहचानता हूं, तुम्हारा आगाज एक बदलने वाला नुतफ़ा (या’नी गन्दा कतरा), अन्जाम बदबूदार मुर्दा और दरमियानी वक़्के (या’नी जिन्दगी तर पेट) में गन्दगी उठाओ इरना है. येह सुन कर “मुहल्लब” (शरमिन्दा हो कर) यला गया और उस ने येह याल छोड दी.

(أَحْيَاءُ الْعُلُومِ ج ۳ ص ۴۱۷ دارصادر بیروت)

(4) बुलन्दी याहने वाले की रुस्वाह

एक बुलुर्ग عَلَيْهِ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : “मैं ने कोहे सफ़ा के करीब एक शप्स को भय्यर पर सुवार देखा, कुछ गुलाम उस के सामने से लोगों को हटा रहे थे, इर मैं ने उसे बगदाद में इस हालत में पाया के वोह नंगे पाउं और हसरत जदा था नीज उस के बाल भी बहोत बढे हुओ थे, मैं ने उस से पूछा : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ क्या मुआ-मला इरमाया ?” तो उस ने जवाब दिया : “मैं ने औसी जगह बुलन्दी याही जहां लोग आजिजी करते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे औसी जगह रुस्वा कर दिया जहां लोग रिइअत (या’नी बुलन्दी) पाते हैं.”

(الزواجر عن اقتراف الكبائر، ج ۱، ص ۱۶۴)

(5) मेरे मकाम में कोई कमी तो नहीं आई

एक रात उठते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के हां कोई मेहमान आया, आप कुछ लिख रहे थे। करीब था के यराग जुल जाता। मेहमान ने अर्ज की मैं उठ कर ठीक कर देता हूँ तो आप ने इरमाया : मेहमान से भिदमत लेना अच्छी बात नहीं है। उस ने कहा गुलाम को जगा दूँ ? इरमाया : वोह अभी अभी सोया है। फिर आप खुद उठे और कुप्पी ले कर यराग में तेल भर दिया। मेहमान ने कहा : या अभीरल मुअमिनीन ! आप ने खुद जाती तौर पर येह काम किया ? इरमाया : जब मैं (इस काम के लिये) गया तो भी उमर था और जब वापस आया तो भी उमर ही था, मेरे मकाम में कोई कमी नहीं आई और बेहतरीन आदमी वोह है जो अल्लाह तआला के हां तवाजोअ करने वाला हो।

(احياء علوم الدين، كتاب ذم الكبر والعجب، ج 3، ص 430)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! हमारे बुजुगाने दीन عليه رَحْمَةُ اللهِ الْكَمِين मकाम व मर्तबा और ओहदा व मन्सब मिलने के बा वुजूद किस कदर आशिजी इरमाया करते थे !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन पर रहमत हो और उन के सहके हमारी मज्दिरत हो।

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ عَلَيْهِ السَّلَامُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तक़्बुर के मज्दीद ईलाज

(1) बारगाहे ईलाही में हाजिरी को याद रभिये

ईस तरह “इंके मदीना” (या’नी अपना मुहा-सबा) कीजिये के कल जब इशर बपा होगा और हर ओक अपने किये का हिसाब देगा तो मुझे भी अपने रब्बे जुल जलाल की बारगाह में अपने आ’माल का हिसाब देना पडेगा, उस वक्त मैं ईन्तिहाई ईज्ज,

जिदलत और पस्ती की जगह पर होउंगा. अगर मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझे से नाराज हुवा तो मेरा क्या बनेगा ! अगर तकब्बुर के सभब मुझे जहन्नम में डेंक दिया गया तो वोह होलनाक अजाब क्यूंकर बरदाश्त कर पाउंगा ? इस तरह तसव्वुर में अजाब को याद करने की वजह से ठन्किसारी पैदा होगी. इन तमाम बातों को सोच कर ان شاء الله عَزَّوَجَلَّ तकब्बुर दूर हो जायेगा, और बन्दा जुद को अद्लाह तआला की बारगाह में हकीर व आजिज भयाल करेगा.

(2) दुआ कीजिये

तकब्बुर से नजात पाने के लिये “मोमिन के हथियार” या’नी दुआ को इस्ति’माल कीजिये और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ से कुछ इस तरह दुआ मांगिये : “या अद्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं नेक बनना चाहता हूँ, तकब्बुर से ज्ञान छुड़ाना चाहता हूँ मगर नइसो शैतान ने मुझे दबा रखा है, औ मेरे मालिक मुझे इन के मुकाबले में काम्याबी अता इरमा, मुझे नेक बना दे, आजिजी का पैकर बना दे.”

امين بجاه النبي الامين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

गुनाहों की आदत छुड़ा या इलाही

मुझे नेक इन्सां बना या इलाही

(3) अपने उयूब पर नजर रभिये

तकब्बुर से बचने के लिये अपने उयूब पर नजर रभना बहोत मुईद है और अपनी आदात व अतवार को तक्वा की छलनी से गुजारना उयूब व नकार्थस की पहचान के लिये बहोत मुआविन है. दाइये रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने बा कमाल है : “अन्करीब मेरी उम्मत को पिछली उम्मतों की बीमारी लाहिक होगी.” सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ ने अर्ज की : “पिछली उम्मतों की बीमारी क्या है ?” तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ने ईशाद इरमाया : “तक़्बुर करना, ईतराना, कसरत से माल जम्मा करना और दुनिया में अेक दूसरे पर सङ्कत ले जाना नीज आपस में जुज्जो हसद रबना, जुप्ल करना, यहां तक के वोह जुल्म में तब्दील हो जाये और इर इतना व इसाद बन जाये.”

(المعجم الاوسط، الحديث: ١٦٠٩٠٦، ج٦، ص٣٤٨)

(4) नुकसानात पेशे नजर रबिये

मोहलिकात का अेक ईलाज येह त्मी है के जब किसी मोहलिक के दरपेश होने का अन्देशा हो तो उस के नुकसानात व अजाबात पर भूब गौर करे ताके अपने अन्दर उस मोहलिक (या'नी हलाक करने वाले अमल) से बचने का जजबा पैदा हो.

(5) आजिजी ईप्तियार कर लीजिये

अपने हिल से तक़्बुर की गन्दगी को साइ करने के लिये आजिजी का पानी ईस्ति'माल करना बेहद मुईद है, पान्तमुल मुर-सलीन, रइमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आलीशान है : “तवाज्जअ (या'नी आजिजी) ईप्तियार करो और मिस्कीनों के साथ बैठा करो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के बडे मर्तबे वाले बन्दे बन जाओगे और तक़्बुर से त्मी बरी हो जाओगे.”

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، الحديث: ٥٧٢٢، ج٣، ص٤٩)

भिन्नीर से बहतर

गुइर व तक़्बुर ने न किसी को शाईस्तगी बप्शी है और न किसी को अ-जमत व सर बुलन्दी की चोटी पर पड़ोयाया है, हां ! जिल्लत की पस्तियों में जइर गिराया है जैसाके नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजरसम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने मुअज्जम है : “जो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आजिजी ईप्तियार करे अद्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अता इरमाओगा, पस वोह जुद को कमजोर समओगा मगर लोगों की नजरों में अजीम होगा और जो तक़्बुर करे अद्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे

जलील कर देगा, पस वोह लोगों की नज़रों में छोटा होगा मगर
 भुद को बडा समजता होगा यहाँ तक के वोह लोगों के नज़दीक कुत्ते
 और भिन्ज़ीर से भी बढतर हो जाता है.”

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، الحدیث: ۵۷۳۴، ج ۳، ص ۵۰)

हर अक के सर में लगाम

अक और जगह इरमाने आलीशान है : “हर ईन्सान के
 सर में अक लगाम होती है जो अक इरिश्ते के हाथ में होती है, जब
 बन्दा तवाजोअ करता है तो उस लगाम के जरीअे उसे बुलन्दी अता
 की जाती है और इरिश्ता कडता है : “बुलन्द् हो जा ! اَعْوَجَّوْجَلَّ
 तुजे बुलन्द् इरमाअे.” और अगर वोह अपने आप को (तक़्क़ुर
 से) भुद ही बुलन्द् करता है तो वोह उसे जमीन की जानिब पस्त
 (या'नी नीचा) कर के कडता है : “पस्त (या'नी नीचा) हो जा ! اَعْوَجَّوْجَلَّ
 तुजे पस्त करे.”

(کنز العمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، باب التواضع، الحدیث: ۵۷۴۱، ج ۳، ص ۵۰)

क्या येह भी मुज़ से बेहतर हो सकता है !

उजरते सय्यिदुना ईमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَوِي उस
 कदर मुन्कसिरुल मिज़ाज थे के हर ईर्द को अपने से बेहतर तसव्वुर
 करते. ईस का सबब येह हुवा के अक दिन दरियाअे दिजला पर
 किसी हबशी को औरत के साथ ईस तरह शराब नोशी में मुत्तला
 देभा के शराब की भोतल उस के सामने थी. उस वक्त आप को येह
 तसव्वुर हुवा के क्या येह भी मुज़ से बेहतर हो सकता है ? क्यूंके येह
 तो शराबी है. ईसी दौरान अक कश्ती सामने आई जिस में सात
 अइराद थे और वोह गरक हो गई, येह देभ कर हबशी पानी में
 कूद गया और छ अइराद को अक अक कर के निकाला. इर आप से
 अर्ज़ किया : आप सिर्फ़ अक ही की जान बचा लें. मैं तो येह ईम्तिहान
 ले रहा था के आप की यश्मे बातिन फुली हुई है या नहीं ! और येह
 औरत जो मेरे पास है, मेरी वालिदा हैं और ईस भोतल

में सादा पानी है. येह सुनते ही आप ईस यकीन के साथ के येह तो कोई गैबी शप्स है उस के कदमों में गिर पड़े और हबशी से कडा के जिस तरह तूने छ अफ़राह की ज़ान बयाई ईसी तरह तक़्बुर से मेरी ज़ान भी बया दे. उस ने दुआ की के अल्लाह तआला आप को नूरे बसीरत अता इरमाअे या'नी किब्रो नप्वत को दूर कर दे. युनान्हे अैसा ही हुवा के ईस के बा'द अपने आप को कभी बेहतर तसव्वुर नहीं किया.

(تذكرة الاولياء فارسی، ص ۴۳)

आजिजी का अेक पडलू

उउरते सय्यिदुना हसन رضي الله تعالى عنه इरमाते हैं: “तवाओअ येह है के जब तुम अपने घर से निकलो तो जिस मुसल्मान से भी मिलो उसे अपने आप से अइजल ज़ानो.”

(الزواجر عن اقتراف الكبائر، ج ۱، ص ۱۶۳)

मेंसबसेबुराहूँनिगाडेकरमछो मगरआपकाहूँनिगाडेकरमछो

आजिजी किस उद तक की ज़ाअे ?

दीगर अप्लाकी आदात की तरह आजिजी में भी अे'तिदाव रभना बहोत उइरी है कयूँके अगर आजिजी में बिला उइरत जियादती की तो जिल्लत और कमी की तो तक़्बुर में ज़ा पडने का षदशा है. लिहाजा ईस उद तक आजिजी की ज़ाअे जिस में जिल्लत और हलका पन न हो.

(احياء العلوم، ج ۳، ص ۴۵۱)

(6) सलाम में पडल डीजिये

हर मुसल्मान को अमीर हो या गरीब, बडा हो या छोटा सलाम में पडल डीजिये. हमारे म-दनी आका صلى الله تعالى عليه وآله وسلم तो बर्यों को भी सलाम में पडल इरमाया करते थे. उउरते सय्यिदुना

अनस رضي الله تعالى عنه يَنْتَ لَدُنْكَوِ كَے पास से गुज़रे तो उन को सलाम किया, फिर इरमाया : “रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ भी इसी तरह किया करते थे.”

(صحيح البخارى، كتاب الاستئذان، باب تسليم على الصبيان، الحديث ٦٢٤٧، ج ٤، ص ١٧٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! हमारे आका किस कदर मुन्कसिरुल मिजाज हैं के छोटों को भी सलाम में पहल किया करते हैं. काश ! हम भी अगर बडे हैं तो छोटों के पहल करने का इन्तिज़ार किये बगैर सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आजिजी वाली सुन्नत “पहले सलाम करना” अदा कर लिया करें.

तेरी सादगी पे लाभों, तेरी आजिजी पे लाभों
हों सलामे आजिजाना म-दनी मदीने वाले
सलाम में पहल करने वाला तक़्बुर से बरी है

उज़रते अब्दुल्लाह رضي الله تعالى عنه नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से रिवायत करते हैं, इरमाया : “पहले सलाम कइने वाला तक़्बुर से बरी है.”

(شعب الایمان، باب في مقارنة وموادة اهل الدين، الحديث ٨٧٨٦، ج ٦، ص ٤٣٣)

कुर्बे ईलाही का उकदार

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में अर्ज़ की गई : “या रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! जब दो शप्स मुलाकात करें तो पहले कौन सलाम करे ?” इरमाया : “पहले सलाम करने वाला अब्दुल्लाह عَزَّوَجَلَّ के जियादा करीब होता है.”

(جامع الترمذی، كتاب الاستئذان والاداب، الحديث ٢٧٠٣، ج ٤، ص ٣١٨)

उज़रते मौलाना सय्यिद अय्यूब अली عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْفَوْى का बयान है के “कोहे लवाली से मेरी त-लबी इरमाई जाती है, मैं ब उमराही शहजादअे अस्गर (हुज़ूर मुक़्तिये आ'जमे हिन्द) उज़रत मौलाना मौलवी शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा फ़ां साहिब مد ظله الاقدس, आ'दे मगरिब वहां पड़ोयता हूं, शहजादा मम्हूड (या'नी जिस की ता'रीफ़ की ज़अे) अन्दर मकान में जाते हुअे येह इरमाते हैं : “अम्नी हुज़ूर को आप के आने की इत्तिलाअ करता हूं.” मगर बा वुजूद इस आगाही के, के हुज़ूर (या'नी इमामे अहले सुन्नत शाह मौलाना अहमद रज़ा फ़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْرُحْمَن) तशरीफ़ लाने वाले हैं, तक़्दीमे सलाम सरकार (या'नी सलाम में पहल आ'ला उज़रत) ही इरमाते हैं, उस वक्त देयता हूं के हुज़ूर बिदकुल मेरे पास जल्वा इरमाते हैं.” (حیات اعلیٰ حضرت، ج ۱، ص ۹۶)

आशिके आ'ला उज़रत अमीरे अहले सुन्नत اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعْبُدُكَ اَدْبَتَ كَرِيْمًا

आशिके आ'ला उज़रत शैभे तरीकत अमीरे अहले

सुन्नत उज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इत्यास अत्तार कादिरि र-जवी مَدَّ ظُلْمَةُ الْعَالِي اम्नी उत्तल मकदूर मिलने वालों से सलाम में पहल इरमाते हैं. अेक म-दनी इस्लामी त्माई का बयान है के मैं ने बारहा कोशिश की के मैं अमीरे अहले सुन्नत اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعْبُدُكَ को पहले सलाम करूं मगर आप اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعْبُدُكَ की आदते करीमा की वजह से बडोत कम मवाकेअ पर औसा करने में काम्याब हो सका.

अल्लाह اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعْبُدُكَ की आ'ला उज़रत और अमीरे अहले सुन्नत पर रडमत हो और इन के सहके उमारी मग़्दिरत हो. اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْخَبِيْب!

(7) અપના સામાન ખુદ ઉઠાઈયે

શહન્શાહે મદીના, કરારે કલ્બો સીના. صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
ફરમાને બા કરીના હૈ : “જિસ ને અપના સામાન ખુદ ઉઠા લિયા
વોહ તકબ્બુર સે આઝાદ હો ગયા.”

(شعب الايمان، باب في حسن الخلق، فصل في التواضع، الحديث: ٨٢٠١، ج ٦، ص ٢٩٢)

(8) ઈન આ'માલ કો ઈખ્તિયાર કીજિયે

મહબૂબે રબ્બુલ ઈઝ્ઝત, મોહસિને ઈન્સાનિયત
કા ફરમાને બરાઅત નિશાન હૈ : “ઊન કા
લિબાસ પહનના, મોમિન ફુ-કરા કી સોહબત મેં બૈઠના, દરાઝ
ગોશ (ગધે) પર સુવારી કરના ઔર બકરી કો રસ્સી સે બાંધ દેના
તકબ્બુર સે બરાઅત (યા'ની છુટકારે) કે અસ્બાબ હૈં.”

(شعب الايمان، باب في الملابس والاونى، الحديث ٦١٦١، ج ٥، ص ١٥٣)

બકરી કી ખાલ પર બૈઠને કી બ-ર-કત

દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના
કી મત્બૂઆ 1250 સ-ફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “બહારે
શરીઅત” જિલ્દ અવ્વલ હિસ્સા 2 સફહા 403 પર હૈ : “બકરી ઔર
મેંઢે કી (પકાઈ હુઈ યા'ની મખ્સૂસ તરીકે સે ખુશ્ક કી હુઈ) ખાલ પર બૈઠને
ઔર પહનને સે મિઝાજ મેં નરમી ઔર ઈન્કિસાર પૈદા હોતા હૈ.”
(بہار شریعت، جلد اول، ص ٤٠٣) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ
શૈખે તરીકત અમીરે અહલે
સુન્નાત ડામ્ત بَرَكَاتُهُمُھُ الْغَالِيہُ અપને બૈઠને કી જગહ પર ઉમૂમન બકરી કી
(ખુશ્ક કી હુઈ) ખાલ બિઘાને કા એહતિમામ ફરમાતે હૈં બલ્કે બયાન
કે દૌરાન ભી અક્સર અવકાત આપ ડામ્ત بَرَكَاتُهُمُھُ الْغَالِيہُ કી ફર્શી ચટાઈ પર
બકરી કી ખાલ બિઘી હુઈ હોતી હૈ. મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો !
આપ ભી કોશિશ કર કે અપને બૈઠને કી જગહ પર બકરી યા મેંઢે કી

(पुश्क की हुँ) भाल बिछा लीजिये और ईस की ब-र-कतों का फुली आंभों से नज़ारा कीजिये.

(9) स-दका दीजिये

हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन औफ़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अइलाक وَسَلَّمَ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : “मुसल्मान का स-दका उम्र में ज़ियादती का सबब है और फुरी मौत से बचाता है और अद्लाह तआला ईस की वजह से तक़्क़ुबुर व इफ़्र को दूर इरमा देता है.”

(مجمع الزوائد، كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة، رقم ٤٦٠٩، ج ٣، ص ٢٨٤)

(10) हक़ भात तस्लीम कर लीजिये

जब किसी हम अस्र से इफ़्तिलाई राय हो, फिर आप पर फुल ज़ाअे के वोह हक़ पर है तो ज़िद करने के बज़ाअे सरे तस्लीम भम कर लीजिये. फिर उस के सामने उस भात का अे'तिराफ़ करते हुअे बयाने हक़ पर उस की ता'रीफ़ ली कीजिये के “आप दुरुस्त इरमा रहे हैं अद्लाह तआला आप को जज़ाअे भैर अता इरमाअे.” अे'तिराफ़े हक़ का येह इकरार अगर्ये नइस पर बहोत बहोत बहोत गिरां है, मगर मुसल्लल अैसा करते रहने से हक़ का अे'तिराफ़ करना आप की आदत बन ज़ाअेगी और ईस की ब-र-कत से तक़्क़ुबुर से ली ज़ान छूटती यली ज़ाअेगी.

(11) अपनी ग-लती मान लीजिये

ईन्सान भता और तूल का मुरक्क़ब है लिहाज़ा जब ली कोई आप की किसी ग-लती की नीशान देही करे अपनी ग-लती मान लीजिये याहे वोह उम्र, तज़रिबे और रुतबे में आप से कम ही क्यूं न हो.

ग-लती का अे'तिराफ़

जलीलुल कद्र मुहदिस ईमाम दारे कुतनी رحمة الله الغنى ज़ाअे

નૌ ઉમ્ર તાલિબે ઈલ્મ થે તો એક દિન હઝરતે સચ્ચિદુના ઈમામ અમ્બારી رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَرَحْمَةُ اللهِ بِنَارِي કી દર્સગાહ મેં હાઝિર હુએ. હદીસ લિખવાને મેં ઈમામ અમ્બારી رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَرَحْمَةُ اللهِ بِنَارِي ને એક રાવી કે નામ મેં ગ-લતી કી, હઝરતે સચ્ચિદુના દારે કુતની رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي કમાલે અદબ કે સબબ ઈમામ અમ્બારી رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَرَحْمَةُ اللهِ بِنَارِي કો તો ટોક નહીં સકે મગર ઈન કે મુસ્તમ્લી કો જો ઉન કી આવાઝ શાગિદોં તક પહોંચાતા થા ઈસ ગ-લતી સે આગાહ કર દિયા. જબ દૂસરે જુમુઆ કો ઈમામ દારે કુતની رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي ફિર મજલિસે દર્સ મેં ગએ તો ઈમામ અમ્બારી رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَرَحْمَةُ اللهِ بِنَارِي કા જોશે હક પસન્દી ઓર બે નફ્સી કા આલમ દેખિયે કે ઉન્હોં ને ભરી મજલિસ કે સામને યેહ એ'લાન ફરમાયા કે ઉસ રોઝ ફુલાં નામ મેં મુઝ સે ગ-લતી હો ગઈ થી તો ઈસ નૌ જવાન તાલિબે ઈલ્મ ને મુઝ કો આગાહ કર દિયા.

(تاريخ بغداد، ج ۳، ص ۴۰۰)

અમીરે અહલે સુન્નત دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْغَالِيه કા મ-દની અન્દાઝ

શૈખે તરીકત અમીરે અહલે સુન્નત બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْغَالِيه કો અલ્લાહ તઆલા ને અપને હબીબ, હબીબે લબીબ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કે સદકે મેં એસે અઝીમુશ્શાન ઔસાફ વ કમાલાત સે નવાઝા હૈ કે ફી ઝમાના ઈસ કી મિસાલ મિલના મુશ્કિલ હૈ. વક્તન ફ વક્તન મુખ્તલિફ મકામાત પર હોને વાલે “મ-દની મુઝા-કરાત” મેં ઈસ્લામી ભાઈ મુખ્તલિફ કિસ્મ કે મ-સલન અકાઈદો આ'માલ, ફઝાઈલ વ મનાકિબ, શરીઅત વ તરીકત, તારીખ વ સીરત, સાઈન્સ વ તિબ, અખ્લાકિય્યાત વ ઈસ્લામી મા'લૂમાત, મુઆશી વ મુઆ-શ-રતી વ તન્ઝીમી મુઆ-મલાત ઓર દીગર બહોત સે મૌઝૂઆત કે મુ-તઅલ્લિફ સુવાલાત કરતે હૈં ઓર શૈખે તરીકત અમીરે અહલે સુન્નત دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْغَالِيه ઉન્હેં હિકમત આમોઝ વ ઈશકે રસૂલ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ મેં રૂબે હુએ જવાબાત સે નવાઝતે હૈં. ઈલ્મ કા સમુન્દર હોને કે બા વુજૂદ આપ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْغَالِيه આગાઝ મેં શુ-રકાએ મ-દની મુઝાકરા સે કુઇ ઈસ તરહ આજિઝી ભરે અલ્ફાઝ

ईशाद इरमाते हैं : “आप सुवालात कीजिये, मगर हर सुवाल का जवाब वोह भी बिस्सवाब (या'नी दुरुस्त) दे पाउं, ज़रूरी नहीं, मा'लूम हुवा तो अर्ज़ करने की कोशिश करूंगा. अगर मुझे भूल करता पाउं तो इौरन मेरी ईस्लाह इरमाउं, मुझे अपने मौक़िफ़ पर बे ज़ा अउता हुवा नहीं, إِنَّ شُكْرِيَا كَعِ سَاثِ رُجُوءِ كَرْتَا پَاؤُغِ.”
 अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की ईन पर रडमत हो और ईन के सदके हमारी मग़्फ़िरत हो.

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

(12) नुमायां हैसियत के तालिब न बनिये

अपने रु-इका के साथ हों या किसी मलङ्गिल में, कभी भी हिल में ईस ज्वाहिश को जगह न दीजिये के मुझे नुमायां हैसियत दी ज़ाउे, उींयी जगह बिठाया ज़ाउे, मेरी आव भगत की ज़ाउे. हां ! किसी ने अज् जुद आप को नुमायां जगह पर बैठने की दर-ज्वास्त की तो कभूल करने में हरज नहीं. अमीरुल मुअमिनीन उउरते सय्यिदुना मौला अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ कहीं तशरीफ़ इरमा हुअे. साहिबे पाना ने उउरत के लिये मस्नद हाज़िर की, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उस पर रौनक अइरोज हुअे और इरमाया : कोई गधा ही ईज़्जत की बात कभूल न करेगा. (فتاوى رضوية، ج ۲۳، ص ۷۱۹)

(13) घर के काम कीजिये

अगर कोई उउर न हो तो घर के छोटे मोटे काम जुद कीजिये. घर वालों की उउरत का सामान अपने हाथ से उठा कर बाजार से घर तक लाईये.

घर के काम काज करना सुन्नत है

उम्मुल मुअमिनीन उज़रते सय्यि-दतुना आ'ईशा सिदीका
 رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है आप इरमाती हैं के “सुल्ताने मक्कअे
 मुकर्रमा, सरदारे मदीनअे मुनव्वरउ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने कपडे
 पुढ सी लेते और अपने ना'लैने मुबारक गांठते और वोड सारे
 काम करते जो मर्द अपने घरों में करते हैं.”

(الجامع الصغير، الحديث ٧٠١٨، ص ٤٣٣)

صَلُّوا عَلَيَّ الْخَيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

बीज का मालिक उसे उठाने का ज़ियादा हकदार है

उज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं के मैं
 सरकारे मदीना, सुल्ताने बा करीना, करारे कलबो सीना, कैज गन्जना
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ बाजार गया. अेक दुकान से आप
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने यार दिरहम का पाअेजामा खरीदा, जब वापस
 पलटे तो मैं ने रसूले करीम, रउिहुर्रडीम أَفْضَلُ الصَّلْوةِ وَالتَّسْلِيمِ से पाअेजामे
 को ईस गरज से पकडा ताके उसे मैं उठा लूं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 ने मुजे मन्अ इरमाते हुअे ईशा'द इरमाया : “बीज का मालिक उसे
 उठाने का ज़ियादा हकदार है हां अगर वोड कमजोर हो, उसे उठाने
 से आज़िज हो तो उस का ईस्लामी भाई उसे उठाने में उस की मदद
 करे.” (تاريخ دمشق لابن عساکر، باب ما ورد في شعره..... الخ، ج ٤، ص ٢٠٥ ملقطاً)

लकड़ियों का गह्वा

उज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अेक
 मर्तबा अपने बाग से निकले तो सर पर लकड़ियों का गह्वा उठा रभा
 था, किसी ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से हैरत से पूछा : “आप के हां तो

बेटे और गुलाम मौजूद हैं जो इस काम के लिये काफ़ी हैं।” तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ईशाद़ि फ़रमाया : “मैं अपने नफ़्स की आजमाईश कर रहा हूँ के ये इस काम से ईन्कार तो नहीं करता।”

(شرح صحيح البخارى لابن بطال، ج ١، ص ٢١٤) तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सिर्फ़ इस ईरादे पर ईक्तिफ़ा नहीं किया बल्के इस का अ-मली तजरिबा भी किया के “आया ! नफ़्स सय्या है या जूटा !”

कमाल में कोई कमी नहीं आती

अमीरुल मुअमिनीन उज़रते मौलाअे काअेनात, अलिय्युल मुर्तजा, शेरे पुदा وَجْهَهُ التَّكْوِينِ فَرَمَاتे हैं : अगर कोई कामिल शप्स अपने घर वालों के लिये कोई चीज़ उठा कर ले जाअे तो इस से उस के कमाल में कोई कमी नहीं आती। (احياء العلوم، ج ٣، ص ٤٣٥)

ईयालदार को अपना सामान पुद उठाना मुनासिब है

अेक बुजुर्ग़ फ़रमाते हैं मैं ने अमीरुल मुअमिनीन उज़रते मौलाअे काअेनात, अलिय्युल मुर्तजा, शेरे पुदा وَجْهَهُ التَّكْوِينِ को देखा के आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अेक दिरहम का गोशत खरीदा और उसे अपनी यादर में उठा लिया, मैं ने अर्ज़ की : अमीरुल मुअमिनीन ! मैं उठा कर ले जाता हूँ. फ़रमाया : “नहीं ईयालदार आदमी को अपना सामान पुद उठाना मुनासिब है.” (احياء العلوم، ج ٣، ص ٤٣٥)

घर के काम कर दिया करते

सदरुशशरीअड, बहरुत्तरीकड उज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'उमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ التَّوْفَى बहोत बडे आलिमे दीन और इकील होने के बा वुजूद आज़िजी व ईन्किसारी के पैकर थे. उदीस शरीफ़ में है : “كَانَ يَكُونُ فِي مَهْنَةِ أَهْلِهِ”

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने घर के काम काज में मशगूल रहते थे (या'नी घर वालों का काम करते थे)''

(صحيح البخارى، كتاب الاذان، باب من كان في حاجة أهله، الحديث ٦٧٦، ج ١، ص ٢٤١) ईसी सुन्नत पर अमल करते हुअे सदरुशशरीअह् عليه وَرَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى घर के काम काज से आर मडसूस न इरमाते, घर में तरकारियां छीलते, काटते और दूसरे काम भी कर दिया करते थे.

(ماہنامہ اشرفیہ، صدر الشریعہ نمبر، ص ٥٢، ملخصاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ईन सभ पर रहमत हो और ईन के सहके उमारी मग़्फ़िरत हो.

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ!

(14) भुद मुलाकात के लिये जाईये

दूसरों को अपने पास बुलाने के बजाअे नईस के तक़्क़ुबुर को तोडने के लिये हतल ईम्कान भुद यल कर मुलाकात करने जाईये.

(15) गरीबों की दा'वत भी कबूल कीजिये

सिई अमीरों से तअल्लुकात बढाने और उन के हां दा'वतों पर जाने के आदी न बनिये बल्के अपने शनासाओं में गरीबों को भी शामिल कीजिये और जब वोह आप को दा'वत हें तो कबूल कीजिये.

ऐसी दा'वत रोज़ कबूल करूं

अेक कमसिन साहिब जादे निहायत ही बे तक़्क़ुबुराना अन्दाज में सादगी के साथ आ'ला हजरत, ईमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह ईमाम अहमद रजा पान عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الرَّحْمَنِ की प्फ़िदमत

में हाज़िर हुअे और अर्ज़ की : “मेरी बुवा (या’नी बूढी वालिदा) ने तुम्हारी दा’वत की है, कल सुब्ह को बुलाया है.” आ’ला उजरत عليه رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّة ने बडी अपनाईयत व शक़्त से उन से दरयाफ़्त इरमाया : “मुजे दा’वत में क्या ख़िलाईयेगा ?” ईस पर उन साख़िब जादे ने अपने कुरते का दामन ज़ो दोनों हाथों से पकडे हुअे थे ड़ैला दिया, जिस में माश की दाल और दो यार मिर्यो पडी हुई थीं. कइने लगे : देखिये ना ! येह दाल लाया हूं. हुज़ूर ने उन के सर पर दस्ते शक़्त ड़ैरते हुअे इरमाया : “अख़्श मैं और (खादिमे ખાસ હાજી કિફાયતુલ્લાહ साख़िब حَمْدُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ; की तरफ़ ईशारा करते हुअे इरमाया) येह कल दस बजे आअेंगे.” और हाज़ी साख़िब से इरमाया मकान का पता दरयाफ़्त कर लीजिये. गरज़ साख़िब जादे मकान का पता बता कर ખુશ ખुश ચલે ગએ.

दूसरे दिन जब वक्ते मुकर्ररा पर आ’ला उजरत عليه رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّة असाअे मुबारक हाथ में लिये हुअे बाहर तशरीफ़ लाअे और हाज़ी साख़िब से इरमाया : “यलिये.” (तो) उन्हीं ने अर्ज़ की : “कहां ?” इरमाया : “उन साख़िब जादे के यहां दा’वत का ज़ो वा’दा किया है, आप को मकान का पता मा’लूम हो गया है या नहीं ?” अर्ज़ की : “हां हुज़ूर मलूक पूर में है.” और साथ हो लिये. जिस वक्त मकान पर पहाँये तो वोह साख़िब जादे दरवाजे पर ખડે ઈन्तिज़ार में थे. आ’ला उजरत عليه رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّة को देખते ही येह कइते हुअे मकान के अन्दर की तरफ़ भागे : “भौलवी साख़िब आ गअे.” दरवाजा के बाहर अेक छप्पर बना हुवा था. आप عليه رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّة वहां ખડे हो कर ઈन्तिज़ार इरमाने लगे. कुछ देर बा’द अेक बोसीदा यटाई आई और उहलिया में मोटी मोटी बाजरे की रोटियां और मिट्टी की रिकाबी में वोही माश की दाल जिस में मिर्यो के टुकडे पडे हुअे थे, ला कर रખ

दी गँ और वोड साडिब ञाँडे कडने लगे : “आँये.” आ’ला उरत عليه السلام ने इरमाया : “बडोत अरुण ! आता हूँ, डाय धोने के लिये पानी ले आँये.” उधर वोड पानी लाने को गअे और उँधर डाय साडिब ने कडा के हुडूर ! येड मकान नक़्कारयी (या’नी नक़्कारा बजाने वाले) का है. आ’ला उरत عليه السلام येड सुन कर कबीदा आतिर (या’नी ररुडदा) हुअे और तरुन इरमाया : “अली क्यूँ कडा, आना आने के आ’द कडा डोता !” उँतने में वोड साडिब ञाँडे पानी ले कर आ गअे. आप عليه السلام ने दरयाइत इरमाया : “आप के वालिद साडिब कडां हैं और क्या काम करते हैं ?” दरवाजे के पर्दे के पीछे से उन साडिब ञाँडे की वालिदा साडिबा ने अरु की : “हुडूर ! मेरे शोडर का उँन्तिकाल डो गया, वोड किसी उमाने में नौबत (या’नी नक़्कारा) बजाने थे, उँस के आ’द तौबा कर ली थी, अब सिई येड लडका है जो राज मजदूरों के साथ मजदूरी करता है.” आ’ला उरत عليه السلام ने येड सुन कर हुआअे ञैरो ब-र-कत इरमाँ. डाय साडिब ने हुडूर के डाय धुलवाअे और ञुड ली डाय धो कर शरीके तआम डो गअे मगर डिल डी डिल में येड सोयते रहे के आ’ला उरत عليه السلام को आने में बडोत अेडतियात है, गिजा में सूँज के बिस्कुट का उँस्ति’माल है, येड रोटी और वोड ली बाजरे की और उँस पर माश की डाल, किस तरड तनावुल इरमाअेंगे ? मगर कुरबान उँस अण्लाक और डिलदारी के, के मेजबान की ञुशी के लिये ञूब सैर डो कर आया. डाय साडिब का बयान है के मैं जब तक आता रहा, आ’ला उरत عليه السلام ली बराबर तनावुल इरमाते रहे वडां से वापसी में पोलीस यौकी के करीब मेरे शुबडे को दूर करने के लिये उँशाँड इरमाया : अगर अैसी ञुलूस की दा’वत रोज डो तो मैं रोज कबूल करूँ.”

(हियात अली हुरत, ज १२, १२३)

गरीबों पर जुसूसी शईकत

मुहद्विसे आ'जमे पाकिस्तान हजरत अल्लामा मौलाना मुहम्मद सरदार अहमद कादिरि رَحْمَةُ اللهِ الْفَوْى عَلَيْهِ (उमूमन मालदारों की दा'वत कबूल न करते थे लेकिन इस के बर अक्स अगर कोई गरीब मुसल्मान दा'वत की पेशकश करता तो जहां तक मुम्किन होता आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ; कबूल इरमा लेते और उस के मा'मूली व सादा खाने पर भी उस की ता'रीफ़ इरमाते ताके उस के दिल में कोई मलाल न आये. अेक मर्तबा अेक गरीब आदमी की दा'वत पर आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ; उस के घर तशरीफ़ ले गये. वहां जा कर मा'लूम हुवा के उस का मकान छप्पर नुमा और बढबूदार अलाके में वाकेअ था मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ; ने उस की दिलजूई के लिये उस के हां खाना तनावुल इरमाया और अपने किसी अमल से उस गरीब को मडसूस न होने दिया के आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ; बढबू मडसूस कर रहे हैं, डालांके आम डालात में मा'मूली सी बढबू भी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ; के लिये ना गवार डोती. (حیاتِ محمدؐ شأعظم، ص 182، ملخصاً) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत डो और उन के सडके डमारी मग़िरत डो.

امين بجاهِ النبي الامين صلى الله تعالى عليه وآله وسلم

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

(16) लिबास में सादगी ईप्तियार कीजिये

लिबास में सादगी ईप्तियार कीजिये. दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 स-इडत पर मुशतमिल किताब, “बडारे शरीअत” डिस्सा 16 सइड 52 पर सदरुशरीअड, बढरुत्तरीकड हजरते अल्लामा मौलाना मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी رَحْمَةُ اللهِ الْفَوْى عَلَيْهِ लिखते हैं : ईतना लिबास जिस से सित्रे औरत डो जाये और गरमी सईई की तकलीफ़

से बये इर्ज है और इस से जाईद जिस से जीनत मकसूद हो और येह के जबके अल्लाह ۞ ने दिया है तो उस की ने'मत का ईजहार किया जाये, येह मुस्तहब है. पास मौकअ पर म-सलन जुमुआ या ईद के दिन उम्दा कपडे पहनना मुबाह है. इस किस्म के कपडे रोज न पहने क्यूंके हो सकता है के ईतराने लगे और गरीबों को जिन के पास जैसे कपडे नहीं हैं नजरे हकारत से देखे, लिहाजा इस से बचना ही चाहिये. और तकब्बुर के तौर पर जो लिबास हो वोह मन्नूअ है, तकब्बुर है या नहीं इस की शनाप्त यूं करे के इन कपडों के पहनने से पहले अपनी जो हालत पाता था अगर पहनने के आ'द भी वोही हालत है तो मा'लूम हुवा के इन कपडों से तकब्बुर पैदा नहीं हुवा. अगर वोह हालत अब बाकी नहीं रही तो तकब्बुर आ गया. लिहाजा जैसे कपडे से बये के तकब्बुर बहोत जुरी सिईत है.

(ردالمحتار، كتاب الحظرو الإباحة، فصل في اللبس، ج ٩، ص ٥٧٩)

काश ! येह लिबास नर्म न होता

हजरते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज ۞ जब तक जलीफा नहीं बने थे आप के लिये जुब्बा अेक हजार दीनार में खरीदा जाता था मगर आप ۞ इरमाते अगर येह खुरदरा न होता (बल्के खूब मुलायम होता) तो कितना अच्छा था लेकिन जब तप्ते खिलाईत पर मु-तमकिकिन हुअे तो आप ۞ के लिये पांय हिरलम का कपडा खरीदा जाता, आप ۞ इरमाते अगर येह नर्म न होता (बल्के खुरदरा होता) तो कितना अच्छा था ! आप ۞ से पूछा गया : औ अमीरल मुअमिनीन ! आप का वोह उम्दा लिबास, आ'ला सुवारी और बेश कीमत ईत्र कहां गया ? आप ۞ ने इरमाया :

मेरा नफ़्स जीनत का शौक रचने वाला है वोह जब किसी दुन्यवी मर्तबे का मज़ा यथता तो उस से उपर वाले मर्तबे का शौक रचता, यहां तक के जब मैं ने ज़िदाइत का मज़ा यथा जो सब से बुलन्द मर्तबा है तो अब उस चीज़ का शौक हुवा जो अल्लाह तआला के पास है (या'नी जन्नत). (احياء علوم الدين، ج ۳، ص ۴۳۶)

अमीरे अडले सुन्नत وَأَمَّتْ بَرَكَاتُكُمْ الْغَالِيَةِ की सादगी

अमीरे अडले सुन्नत وَأَمَّتْ بَرَكَاتُكُمْ الْغَالِيَةِ उमूमन सादा और सइद लिबास बगैर ईस्त्री के ईस्ति'माल करना पसन्द इरमाते हैं जबके सर पर फुलते हुअे सफ़्तरंग का सादा इमामा बांधते हैं. अक म-दनी मुज़ाकरे में इस की छिक्मत बयान करते हुअे कुछ यूं ईशाद इरमाया : “मैं उम्दा और मडंगा लिबास पहनना पसन्द नहीं करता डालांके मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम से बेहतरीन लिबास पहन सकता हूं. मुझे तोडई में भी लोग निहायत कीमती और यमकदार किस्म के कपडे दे जाते हैं लेकिन मैं फुद पहनने के बज़ाअे किसी और को दे देता हूं क्यूंके अक तो أَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मेरे मिज़ाज में अल्लाह तआला ने सादगी अता इरमाई है, दूसरा मेरे पीछे लाओं लोग हैं अगर मैं मडंगे तरीन लिबास पहनूंगा तो येह भी मेरी पैरवी करने की कोशिश करेंगे. मालदार इस्लामी भाई तो शायद पैरवी करने में काम्याब डो भी जाअें लेकिन मेरे गरीब इस्लामी भाई कहां जाअेंगे इस लिये मैं अपने गरीब इस्लामी भाईयों की मडब्बत में उम्दा लिबास पहनने से कतराता हूं.”

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ईन पर रहमत डो और ईन के सदके डमारी मग़्दिरत डो.

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

(17) म-दनी माडोल अपना लीजिये

तक़्क़ुुर और दीगर गुनाहों से बचने का ज़रूरी पाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी का म-दनी माडोल अपना लीजिये. **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ !**

“दा'वते इस्लामी” ने लाखों मुसल्मानों बिल ખુसूस नौ जवान इस्लामी भाईयों और बहनों की जिन्दगियों में म-दनी इन्किलाब भरपा कर दिया, कई बिगडे हुअे नौ जवान तौबा कर के राडे रास्त पर आ गअे, बे नमाज़ी न सिर्फ़ नमाज़ी बल्के नमाज़ें पढाने वाले (या'नी इमामे मस्जिद) बन गअे, मां बाप से ना जैबा रविय्या इप्तिहार करने वाले बा अदब डो गअे, कुफ़्र के अंधेरो में तटकने वालों को नूरे इस्लाम नसीब हुवा, यूरोपी मुमालिक की रंगीनियों को देखने के ज्वाइश मन्द का'बतुल मुशर्रफ़ा व गुम्बदे खज़रा की जियारत के लिये बे करार रहने लगे, दुन्या के बे ज़ा गमों में घुलने वाले इिके आभिरत की म-दनी सोय के डामिल बन गअे, इंडीश रसाईल और इंडीश डाईजस्टों के शाईकीन उ-लमाअे अडले सुन्नत **دامت فیوضهم** के रसाईल और दीगर दीनी कुतुब का मुता-लआ करने लगे, तहरीक की खातिर सफ़र के आदी म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के डमराड राडे खुदा **عَزَّوَجَلَّ** में सफ़र करने वाले बन गअे और मड्ज़ दुन्या की दौलत इकट्ठी करने को मकसदे डयात समजने वालों ने इस म-दनी मकसद को अपना लिया के **(اِنَّ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ)** “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है.” “दा'वते इस्लामी” से वाबस्ता डोने की ब-र-कत से आ'ला अज्लाकी

औसाफ़ عز وجل ان الله عز وجل आप के किरदार का भी हिस्सा बनते यले
 ज़ांमोंगे. हर ईस्लामी भाई को यादिये के वोड अपने शहर में होने
 वाले “दा’वते ईस्लामी” के हफ़तावार सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में
 शिर्कत करे और राडे पुदा عز وجل में सफ़र करने वाले आशिकाने रसूल
 के म-दनी काङ्किलों में सफ़र करे. इन म-दनी काङ्किलों में सफ़र की
 अ-र-कत से आप की जिन्दगी में म-दनी ईन्किलाअ अरपा डो
 ज़ांमोंगा, عز وجل ان الله عز وجل ईस्लामी अडनों को भी यादिये के अपने शहर
 में होने वाले ईस्लामी अडनों के हफ़तावार सुन्नतों भरे ईजतिमाअ
 में पाअन्दी से शिर्कत करे और दा’वते ईस्लामी के सुन्नतों की तरबियत
 के म-दनी काङ्किलों की मुसाफ़िरा अनने की सआदत भी डसिल इरमाती
 रहें मगर ईस्लामी अडनों के म-दनी काङ्किले की हर मुसाफ़िरा के
 साथ उस के अर्यों के अब्बू या काबिले अे’तिमाद महरम का साथ
 डोना लाजिमी है नीज जिम्मेदारान को अपनी मरजी से म-दनी
 काङ्किले सफ़र करवाने की ईजजत नहीं म-सलन पाकिस्तान की
 ईस्लामी अडनों के म-दनी काङ्किले के लिये “ईस्लामी अडनों की
 मजलिस अराअे पाकिस्तान” की मन्ज़ूरी ज़रूरी है.

ईमां की अडार आई ईजाने मदीना में

दा’वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना
 की मत्बूआ “ईजाने सुन्नत” जिल्ड 2 के 499 स-इडत पर मुशतमिल
 आअ, “गीअत की तआड कारियां” सइड 96 पर शैअे तरीकत अमीरे
 अडले सुन्नत आनिये दा’वते ईस्लामी डजरत अल्लामा मौलाना
 अबू बिलाल मुहम्मद ईलयास अतार कादिरि رحمتهما लिअते

हैं : सुल्तानआबाद (बाबुल मदीना कराची) के अक ईस्लामी भाई के बयान का लुब्जे लुबाब है के हमारे अलाके में अक गैर मुस्लिम (उम्र तकरीबन 30 साल) अपने दोस्तों के साथ रहता था जिन में कुछ मुसल्मान भी थे, आज कल के अक्सर नौ जवानों की तरह येह लोग भी केबल पर झिंमे डिरामे देखा करते थे. जब २-मजानुल मुबारक (सि. 1429 हि.) में म-दनी येनल का आगाज हुवा तो केबल पर ईस के म-दनी सिखिले जारी हुअे, उस गैर मुस्लिम ने जब येह सिखिले देभे तो उसे बडे अच्छे लगे. अब वोह अक्सर व बेशतर म-दनी येनल ही देखा करता, म-दनी येनल की ब-र-कत से आधिरे कार वोह कुई के अंधेरे से नजात पाने और ईस्लाम के नूर से अपने दिल को यमकाने के लिये दा'वते ईस्लामी के आलमी म-दनी मर्कज हैजाने मदीना हाजिर हुवा, और कलिमा पढ कर मुसल्मान हो गया. फिर येह ईस्लामी भाई इइतावार सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में हजारों ईस्लामी भाईयों और म-दनी येनल के नाजिरीन के सामने सरकारे गौसे आ'उम $\text{رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ}$ का मुरीद हो कर कादिरि र-जवी भी बन गया. नमाजे बा जमाअत की पाबन्दी शुअ कर दी, येहरे पर दाढी शरीफ सजा ली, कभी कभार सज्ज सज्ज ईमामा शरीफ सर पर सजा कर ईस का हैज भी लूटने लगा, दा'वते ईस्लामी के मद्र-सतुल मदीना (बाविगान) में कुरआने मज्हद पढने का सिखिला भी शुअ कर दिया. सहराअे मदीना, मदी-नतुल औलिया मुलतान शरीफ में होने वाले दा'वते ईस्लामी के तीन रोजा बैनल अक्वामी सुन्नतों

भरे ँजतिमाअ में ल्मी शरीक हुवा. अद्लाड तआला उन को और
 डम सअ को ँमान पर साबित कडम रडे. أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

क्या आप नेक बनना चाहते हैं ?

صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ ﷺ ! शैभे तरीकत, अभीरे अडले सुन्नत, आनिये

दा'वते ँस्लामी डउरत अद्लामा मौलाना मुडम्मड ँल्यास अतार
 काटिरी २-अवी صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ ﷺ ने ँस पुर इतिन दौर में आसानी से
 नेकियां करने और गुनाहों से अयने के तरीकअकार पर मुशतमिल
 शरीअत व तरीकत का ज़मेअ मजमूआ अनामे "म-दनी ँन्आमात"
 अ सूरते सुवालात अता इरमाया है. ँस्लामी आँयों के लिये 72,
 ँस्लामी अहनों के लिये 63 और त-ल-अअे ँल्मे दीन के लिये
 92, दीनी तालिआत के लिये 83 और म-दनी मुन्नों और मुन्नियों
 के लिये 40 और "अुसूसी ँस्लामी आँयों" (या'नी गूंगे अहरो) के
 लिये 27 म-दनी ँन्आमात हैं. अे शुमार ँस्लामी आँ, ँस्लामी
 अहनें और त-लआ "म-दनी ँन्आमात" के मुताअिक अमल कर
 के रोजाना सोने से कडल "इके मदीना" या'नी अपने आ'माल का
 ज़अेजा ले कर "म-दनी ँन्आमात" के पोंकित साँज रिसाले में
 दिये गअे आने पुर करते हैं. ँन म-दनी ँन्आमात को अपना
 लेने के आ'द नेक अनने और गुनाहों से अयने की राह में आँल
 रुकावटें अद्लाड तआला के इजलो करम से अ तदरीज दूर डोती
 यली ज़ती हैं और ँस की अ-र-कत से صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ ﷺ पाअन्दे सुन्नत
 अनने, गुनाहों से नइरत करने और ँमान की अिइजत के लिये
 कुठने का जेहन ल्मी अनता है. डमें याडिये के आ किरदार मुसल्मान

जनने के लिये मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाज से “म-दनी
 एन्आमात का रिसाला” हासिल करें और रोजाना झिके मदीना
 (या’नी अपना मुहा-सबा) करते हुअे एस में दिये गअे जाने पुर करें
 और हर म-दनी या’नी क-मरी माह (छिजरी सिन) के एब्तिदाए
 दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के म-दनी एन्आमात के
 जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा’मूल बना लें.

आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने प्वाब में बिशारत दी

भीठे भीठे एस्लामी भाईयो ! म-दनी एन्आमात का रिसाला
 पुर करने वाले किस कदर ખુश किस्मत होते हैं एस का अन्दाजा एस
 म-दनी बहार से लगाईये युनान्ये हैदरआबाद (बाबुल एस्लाम सिन्ध)
 के अेक एस्लामी भाई का कुए एस तरह डलझिया बयान है के माहे
 र-जबुल मुरज्जब 1426 हि. की अेक शज मुजे प्वाब में मुस्तफ़ा
 जाने रडमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जियारत की अजीम सआदत
 मिली. लबहाअे मुजा-रका को जुम्बिश हुई और रडमत के झूल
 जउने लगे, अल्फाज कुए यू तरतीब पाअे : जो एस माह रोजाना
 पाबन्दी से म-दनी एन्आमात से मु-तअद्लिक झिके मदीना करेगा,
 अद्लाह عَزَّوَجَلَّ एस की मग़ि़रत इरमा देगा.

म-दनी एन्आमात की भी मरडबा क्या बात है

कुर्बो डक के तालिबों के वासिते सौगात है

(फ़िज़ान सन्त, ज, 1, बाब फ़िज़ान रमज़ान, स 1135)

(18) સાત મુફીદ અવરાદ

ધ્યારે ઇસ્લામી ભાઈયો ! તકબ્બુર સે બચને કે લિયે મઝકૂરા ઉમૂર કે સાથ સાથ રૂહાની ઇલાજ ભી કીજિયે, મ-સલન

(1) જબ ભી દિલ મેં તકબ્બુર મહસૂસ હો તો “**أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ**” એક બાર પઢને કે બા’દ ઉલટે કન્ધે કી તરફ ત્રીન બાર થૂ થૂ કર દીજિયે.

(2) રોઝાના દસ બાર “**أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ**” પઢને વાલે પર શૈતાન સે હિફાઝત કરને કે લિયે **اَعْوَجِلْ** એક ફિરિશ્તા મુકરર કર દેતા હૈ.

(مسند ابى يعلى، مسند انس بن مالك، الحديث ٤١٠٠، ج ٣، ص ٤٠٠ ملخصاً)

(3) સૂરએ ઇબ્લાસ ગ્યારહ બાર સુબહ (આધી રાત ઢલે સે સૂરજ કી પહલી કિરન ચમકને તક સુબહ હૈ) પઢને વાલે પર અગર શૈતાન મઅ લશકર કે કોશિશ કરે કે ઇસ સે ગુનાહ કરાએ તો ન કરા સકે જબ તક કે યેહ ખુદ ન કરે. (الوظيفة الكريمة، الاذكار الصباحية، ص ١٨)

(4) સૂ-રતુન્નાસ પઢ લેને સે ભી વસ્વસે દૂર હોતે હેં.

(5) જો કોઈ સુબહ વ શામ ઇક્કીસ ઇક્કીસ બાર “**لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ**” પાની પર દમ કર કે પી લિયા કરે તો **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** વસ્વસએ શૈતાની સે બહોત હદ તક અમ્ન મેં રહેગા. (مرآة المناجیح، باب الوسوسة، ج ١، ص ٨٤)

(6) “**هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ**”

से झैरन वस्वसा दूर हो जाता है.

(7) سُبْحَنَ الْمَلِكِ الْحَلَّاقِ ط اِنْ يَّشَاءُ يُدْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ
 0 كَسْرَتِ اِيسِ (या'नी वस्वसे
 को) ४४ से कत्अ कर देती है. (فتاوى رضويّة ج 1 ص 44)

ईलाज के बा वुजूद ईफ़ाका न हो तो ?

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! अगर त्तरपूर ईलाज के बा'द भी ईफ़ाका न हो तो धबराईये नहीं बल्के ईलाज जारी रभिये के "दिल को भी आराम हो ही जायेगा." क्यूंके अगर हम ने ईलाज तर्क कर दिया तो गोया धुद को मुकम्मल तौर पर शैतान के उवाले कर दिया और वोह हमें कहीं का न छोडेगा. लिहाजा हमें याहिये के तक़्बुर से जान छुडाने की कोशिश जारी रभें. उजरते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي (अल मु-तवफ़्फ़ा 505 डि.) हम जैसों को समजाते हुअे लिखते हैं : "अगर तुम मडसूस करो के शैतान, अद्लाह عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगने के बा वुजूद तुम्हारा पीछा नहीं छोडता और गालिब आने की कोशिश करता है तो ईस का मतलब येह है के अद्लाह عَزَّوَجَلَّ को हमारे मुजाहदे, हमारी कुव्वत और सभ्र का ईम्तिहान मकसूद है या'नी अद्लाह तआला आज़माता है के तुम शैतान से मुकाबला और मुहा-रबा (या'नी जंग) करते हो या उस से मगलूब हो जाते हो."

(منهاج العابدین، العائق الثالث: الشيطان، ص 36، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْكَلْبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

“मदीना” के पांच लुइक़ की निस्बत से 5 मु-तफ़रक़ म-दनी इल

(1) मकान को रेशम, यांटी, सोने से आरास्ता करना म-सलन दीवारों, दरवाजों पर रेशमी पर्दे लटकाना और जगह जगह करीने से सोने यांटी के लुइक़ व आलात (या'नी बरतन और औजार) रचना, जिस से मकसूद मइज़ आराईश व जैबाईश हो तो कराहत है और अगर तकब्बुर व तफ़ापुर से ऐसा करता है तो ना ज़ाईज है.

(ردالمحتار، ج ٩، ص ٥٨٥) गालिबन कराहत की वजह येह होगी के ऐसी चीज़ें अगर्ये इब्तिदाअन तकब्बुर से न हों, मगर बिल आप्तिर उमूमन इन से तकब्बुर पैदा हो ज़ाया करता है.

(بهار شریعت، حصّه ١٦، ص ٥٧)

(2) रेशम का रुमाल नाक वगैरा पूंछने या वुजू के बा'द हाथ मुंह पूंछने के लिये रचना ज़ाईज है या'नी जबके इस से पूंछने का काम ले, रुमाल की तरह उसे न रभे और तकब्बुर भी मकसूद न हो.

(ردالمحتار، کتاب الحظر و الإباحة، ج ٩، ص ٥٨٧ - ٥٨٨)

(3) नाक, मुंह पूंछने के लिये रुमाल रचना या वुजू के बा'द हाथ मुंह पूंछने के लिये रुमाल रचना ज़ाईज है, इसी तरह पसीना पूंछने के लिये रुमाल रचना ज़ाईज है और अगर बराहे तकब्बुर हो तो मन्अ है.”

(الفتاوى الهندية، کتاب الکراهية، ج ٥، ص ٣٣٣)

(4) येह शप्स सुवारी पर है और इस के साथ और लोग पैदल चल रहे हें, अगर मइज़ अपनी शान दिखाने और तकब्बुर के लिये ऐसा करता है तो मन्अ है.” (٣٦٠، ص ٥، ج ٥، الفتاوى الهندية)

और ज़रूरत से छो तो हरज नहीं, म-सलन येह बूढा या कमजोर है के यल न सकेगा या साथ वाले किसी तरह इस के पैदल यलने को गवारा ही नहीं करते जैसाके भा'ज मर्तबा उ-लमा व मशा'य के साथ दूसरे लोग जुद पैदल यलते हैं और उन को पैदल यलने नहीं देते, इस में कराहत नहीं जबके अपने दिल को काबू में रभें और तक़्बुर न आने दें और महुज उन लोगों की दिलजूई मन्ज़ूर हो.”

(بهار شریعت، حصّه ۱۶، ص ۲۴۰)

(5) कदरे किफ़ायत से जा'ईद इस लिये कमाता है के हु-करा व मसाकीन की खबर गीरी कर सकेगा या अपने करीबी रिश्तेदारों की मदद करेगा येह मुस्तलख है और येह नफ़ल ईबाहत से अइजल है, और अगर इस लिये कमाता है के मालो दौलत ज़ियादा होने से मेरी ईज़्जत व वकार में ईजाज़ा होगा, इन्प्रो तक़्बुर मकसूद न हो तो येह मुबाह है और अगर महुज माल की कसरत या तफ़ापुर मकसूद है तो मन्अ है.

(الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية، الباب الخامس عشر في الكسب، ج ۵، ص ۳۴۹)

खबरदार : गीबत हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है

गीबतके खिलाफ़ ऐ'लाने जंग

“न गीबत करेंगे न गीबत सुनेंगे”

إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ